महामंदी क्या थी?

महामंदी क्या थी?

जेनेट बी पास्कल

चित्र: देदे पुत्रा

विषय-वस्तु

महामंदी क्या थी?

मौज-मस्ती का समय

बुलबुला फूटता है

बैंक फेल

हूवरविल्स और होबोज़

खेत खो देना

रूजवेल्ट बचाव के लिए

धूल का कटोरा

और भी बड़े बदलाव

युद्ध!

राष्ट्रपति की शक्ति

समय-रेखा

विश्व-रेखा

महामंदी क्या थी?

1928 के पतझड़ में संयुक्त राज्य अमेरिका के भावी राष्ट्रपति हर्बर्ट हूवर ने घोषणा की, "हम आज अमेरिका में इतिहास में पहली बार गरीबी पर अंतिम विजय के काफी करीब हैं." अधिकांश नागरिक उनसे सहमत थे. लोगों ने उतना अच्छा जीवन पहले कभी नहीं जिया था.

जनसंख्या के केवल 4 प्रतिशत लोग ही बेरोजगार थे - प्रत्येक सौ श्रमिकों में से केवल चार.

पर उसके ठीक एक साल के बाद, वित्तीय दहशत हावी हो गई. न्यूयॉर्क शेयर बाजार टूट गया. करोड़पति बर्बाद हो गए. आम नागरिकों ने अपना सब कुछ खो दिया.
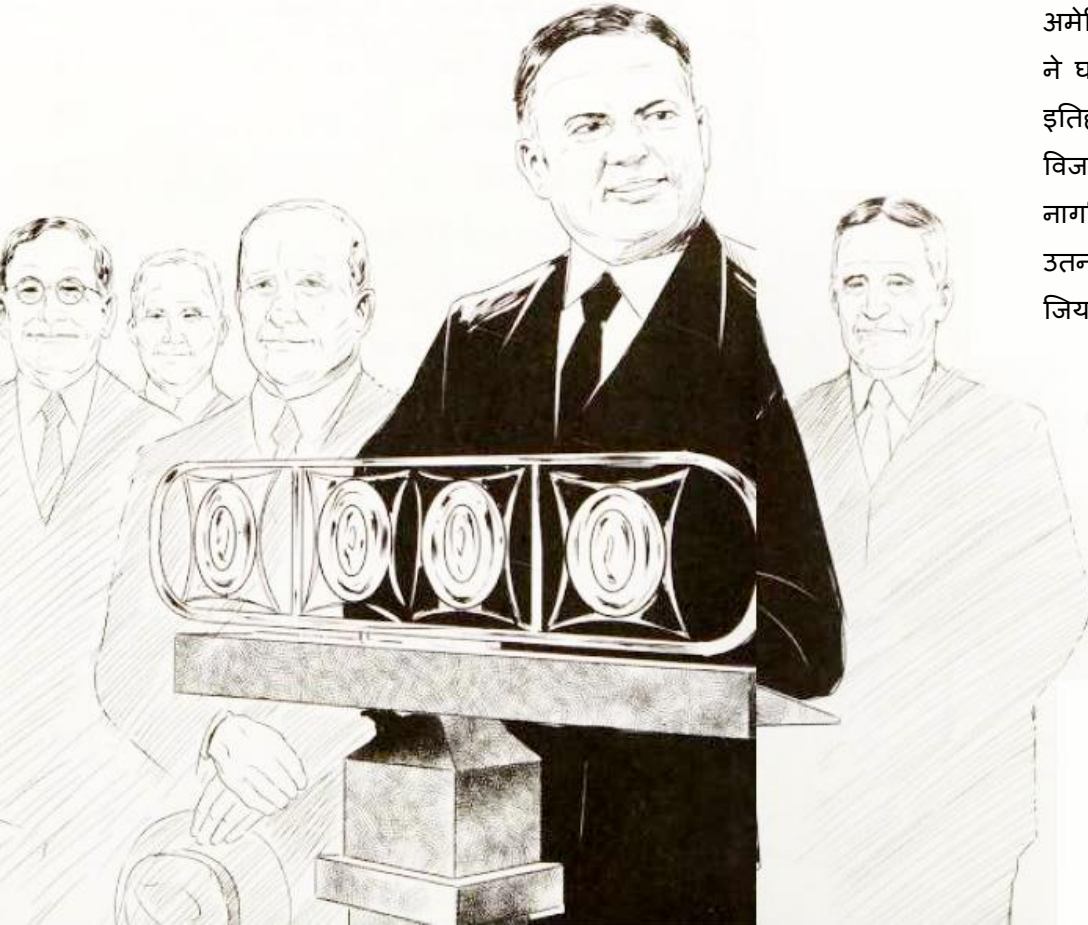
शेयर बाजार से आर्थिक संकट देश के बाकी हिस्सों में फैल गया. बैंक और व्यवसाय बंद हो गए. लोगों की जीवन भर की बचत पूँजी गायब हो गई. उन्होंने अपनी नौकरी और अपने घर खो दिए. 1933 तक, हर चार में से एक अमेरिकी बेरोज़गार था. फिर वो आर्थिक संकट जल्द ही पूरी दुनिया भर में फैल गया.

इस अवधि को "ग्रेट-डिप्रेशन" या महामंदी कहा जाता है. यह आधुनिक दुनिया की अब तक की सबसे खराब वित्तीय आपदा थी.

किसी देश को चलाने वाला सारा धन, सामान, व्यवसाय और श्रमिक उस देश की अर्थव्यवस्था कहलाते हैं. महामंदी के दौरान, अर्थव्यवस्था लगभग पूरी तरह से चरमरा गई थी. अर्थव्यवस्था पर आश्रित लोगों के लिए, वो एक बुरे सपने की तरह था जो कभी खत्म होने का नाम नहीं ले रहा था. आखिर क्या हुआ? अच्छा समय और खुशहाली, इतनी जल्दी कैसे ख़त्म हो गई?
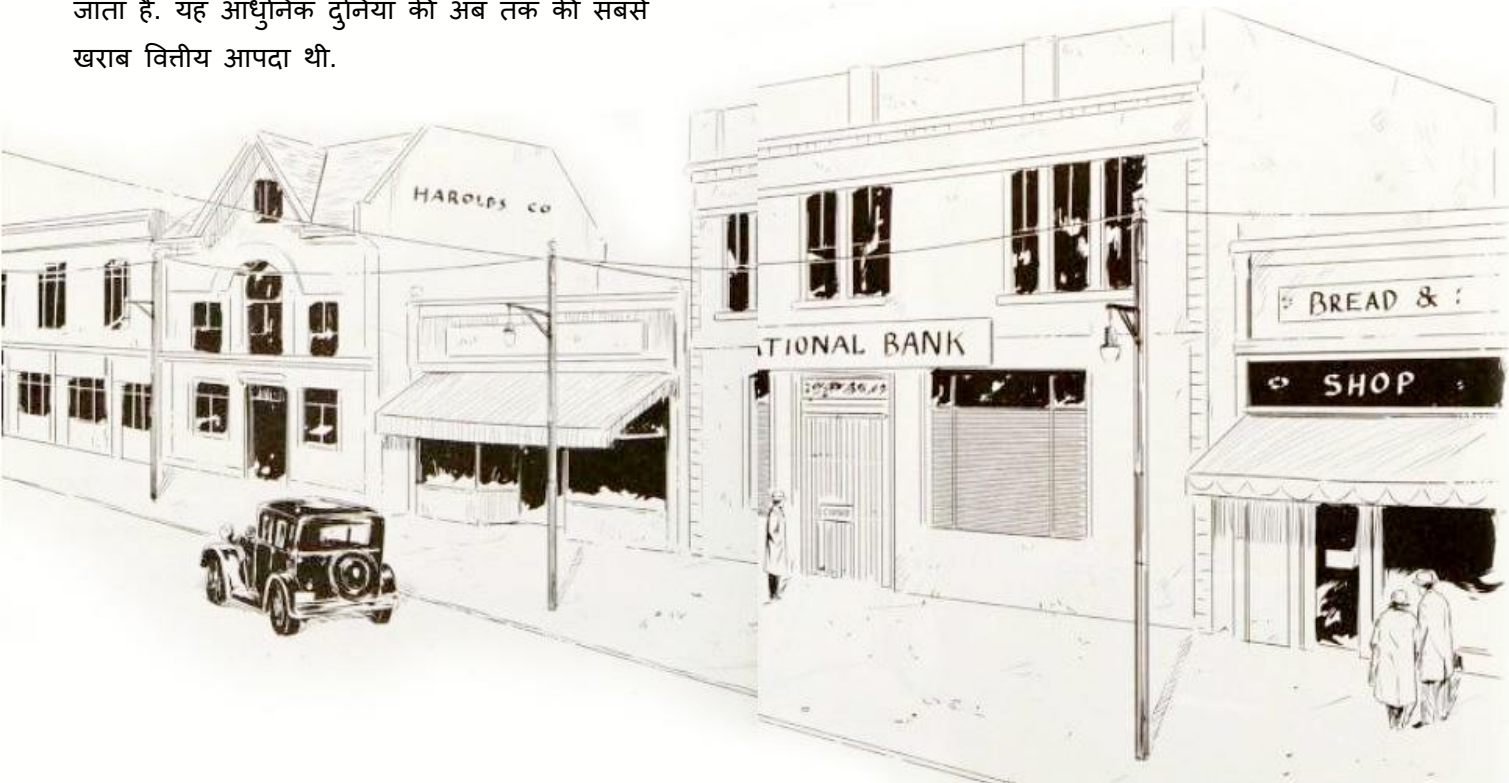
अध्याय 1

मौज-मस्ती का समय

द रोअरिंग ट्वेंटीज़, नया दौर, जैज़ का युग. . . 1920 के दशक के यह सभी सामान्य नाम हमें बताते हैं कि वो ज़िंदा रहने के लिए एक रोमांचक दशक था.

प्रथम विश्व युद्ध की भयावहता तब तक ख़त्म हो चुकी थी. दुनिया में शांति थी. हर कोई पैसे कमा रहा था, और वो मौज-मस्ती करने का समय था.

बिजली और टेलीफोन लाइनें अधिक-से-अधिक स्थानों को जोड़ रही थीं. दैनिक जीवन को आसान बनाने वाले और श्रम बचाने वाले उपकरण, अचानक अब हर जगह मौजूद थे. गाड़ियाँ इतनी सस्ती थीं कि मध्यमवर्गीय परिवार उन्हें खरीद सकते थे. चारों तरफ सड़कें बन रही थीं. अचानक अब पूरे देश में कार में बैठकर कोई भी घूम सकता था.

लोग हर दिन अपने अखबार खोलते और विज्ञापन देखते थे. विज्ञापन लोगों से बाहर जाकर खर्च करने, और मज़े करने का आग्रह करते थे. पूरे देश के परिवार एक ही रेडियो-शो और फिल्मों का आनंद लेते थे. अधिकांश शहरों में विशाल, फैंसी फिल्म थिएटर थे जो "महल" जैसे भव्य थे जहां दर्शक खुद को राजा-महाराजा जैसे महसूस करते थे.

बहुत से लोग, शहरों में जाकर बस रहे थे. जब प्रथम विश्व युद्ध शुरू हुआ, तो अमरीका में आधी से अधिक आबादी ग्रामीण इलाकों में रहती थी. पर बीस के दशक के अंत तक, हर दस में से लगभग छह लोग, शहरों में रह रहे थे.

शराब-निषेध

1920 में, अमरीकी सरकार ने शराब को अवैध बना दिया था. इस कानून को "निषेध" कहा गया. लेकिन इसने लोगों को शराब पीने से रोका नहीं. बीस के दशक के दौरान, "स्पीकेसीज़" नामक अवैध बार में जाना फैशन बन गया था. पेय बनाने या तस्करी करने वाले लोगों को "बूटलेगर्स" कहा जाता था. मद्यनिषेध के दौरान, बूटलेगर्स की शक्ति के कारण माफिया जैसे गैंगस्टर संगठनों का उदय हुआ. महामंदी के दौरान कई लोग बूटलेगर बनकर बच गए. फ्रैंकलिन डेलानो रूजवेल्ट जैसे राजनेता, जो निषेध को समाप्त करना चाहते थे, उन्हें "वेट्स" बुलाया गया.

वो एक रोमांचक नया समय था. घूमने जाने के लिए तमाम स्थान थे और खरीदने के लिए बाजार उत्पादों से भरा हुआ था. लोग चीजों के लिए नए तरीके से भुगतान कर सकते थे—आसान क्रेडिट द्वारा. इससे पहले ज्यादातर अमेरिकियों को पैसा उधार लेना गलत लगता था. उस समय जो लोग अमीर नहीं थे उनके लिए किसी भी बैंक से ऋण प्राप्त करना कठिन था. लेकिन अब उधार लेना बहुत आसान हो गया था. लोगों ने शुरू में कुछ पैसे देकर फैंसी नई वाशिंग मशीन और वैक्यूम क्लीनर खरीदे. उन्होंने बकाया पैसा, हर महीने थोड़ा-थोड़ा करके भुगतान करने का वादा किया. 1920 का दशक "अभी खरीदें, बाद में भुगतान करें" का युग था.

"अभी खरीदें, बाद में भुगतान करें" केवल रेडियो और वैक्यूम क्लीनर पर ही लागू नहीं होता था. लोगों ने उधार के पैसों से स्टॉक मार्केट के शेयर भी खरीदे.

स्टॉक लंबे समय से प्रचलन में थे. मूल रूप से, वे इस तरह काम करते थे: एक निवेशक माइक्रोसॉफ्ट जैसी कंपनी में कुछ शेयर खरीदता है. अब उसके पास कंपनी का एक छोटा सा हिस्सा होता है. जब कम्पनी अच्छा प्रदर्शन करती है, तो शेयरों का मूल्य बढ़ जाता है.

जब कम्पनी खराब प्रदर्शन करती, तो शेयरों की कीमत गिर जाती है. अगर कंपनी फेल होती है, तो उसके शेयर भी डूब जाते हैं. शेयरों का मूल्य लगातार बदलता रहता है, और शेयरों को किसी भी समय उनके उस समय के मूल्य पर बेचा जा सकता है. लोग ऐसी कंपनी की खोज करने की उम्मीद करते हैं, जो बहुत मशहूर न हो. तब वे उसका स्टॉक सस्ते में खरीद लेते हैं. यदि कंपनी बहुत सफल हो जाती, तो उसके शेयरों का मूल्य बढ़ जाता, और तब कोई भाग्यशाली निवेशक बहुत कमाई कर सकता है.

1920 के दशक में शेयर बाजार एक रोमांचक जगह थी. शेयरों का मूल्य आसमान छू रहे थे. वो जुआ खेलने का एक ऐसा तरीका लग रहा था जिसमें हर कोई जीत सकता था.

यहां तक कि जो लोग स्टॉक-मार्केट के बारे में कुछ नहीं जानते थे वे भी अपनी किस्मत आजमाना चाहते थे. सबसे महत्वपूर्ण स्थान जहां स्टॉक खरीदे और बेचे जाते थे वो न्यूयॉर्क शहर में वॉल स्ट्रीट पर स्थित था.

स्टॉक सबसे ऊंची कीमत पर!

वॉल स्ट्रीट

वॉल स्ट्रीट, मैनहट्टन शहर में है. उसका नाम उस दीवार पर पड़ा है जो कभी शहर की उत्तरी सीमा पर खड़ी थी. अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, लोग व्यापार करने के लिए वहां एक पेड़ के नीचे इकट्ठा होते थे. धीरे-धीरे वो स्थल शहर का मुख्य व्यवसाय क्षेत्र बन गया. 1903 में, न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज को बनाया गया था. धनवान व्यक्ति स्टॉक एक्सचेंज में अपने बैठने के लिए एक सीट खरीद सकते थे. केवल सीट वाले लोगों को ही स्टॉक का व्यापार करने की अनुमति थी.

जब वे अन्य लोगों के लिए व्यापार करते थे, तो उन्हें "स्टॉकब्रोकर" कहा जाता था. चूंकि वॉल स्ट्रीट पर इतना कारोबार किया जाता था, इसलिए लोगों ने अमेरिका में कहीं भी वित्तीय लेनदेन के संदर्भ में "वॉल स्ट्रीट" का उपयोग करना शुरू कर दिया.
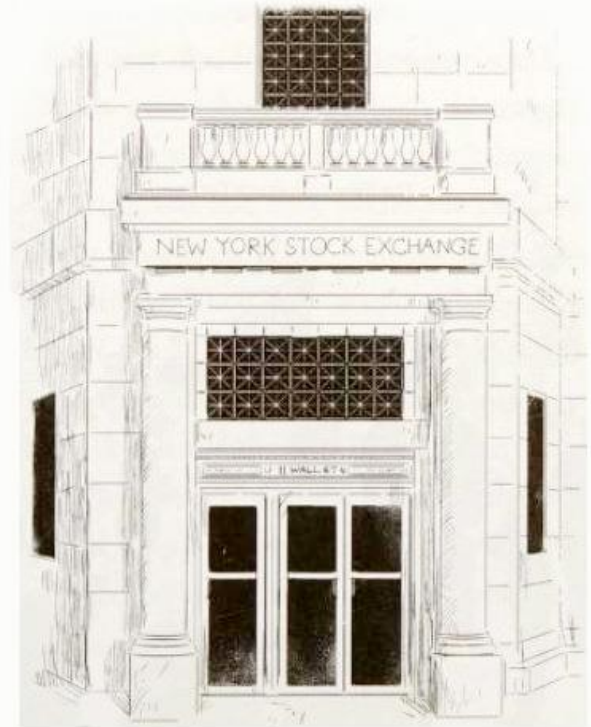
जब छोटे निवेशकों शेयर बाजार में कुछ पैसा कमाते, तो आमतौर पर वो उस कमाई से और अधिक स्टॉक खरीदते थे, और फिर पहले से भी ज्यादा अमीर होने की उम्मीद करते थे. उस समय उसमें उन्हें कोई जोखिम नहीं लगता था, क्योंकि सारे शेयरों के मूल्य बढ़ रहे थे. बिना पैसे वाले लोग भी स्टॉक खरीदना चाहते थे. उसके लिए, वे पैसे उधार लेते थे. 1929 तक, बैंकों द्वारा उधार दिए गए धन का लगभग आधा हिस्सा, स्टॉक खरीदने के लिए इस्तेमाल किया गया था.

न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज
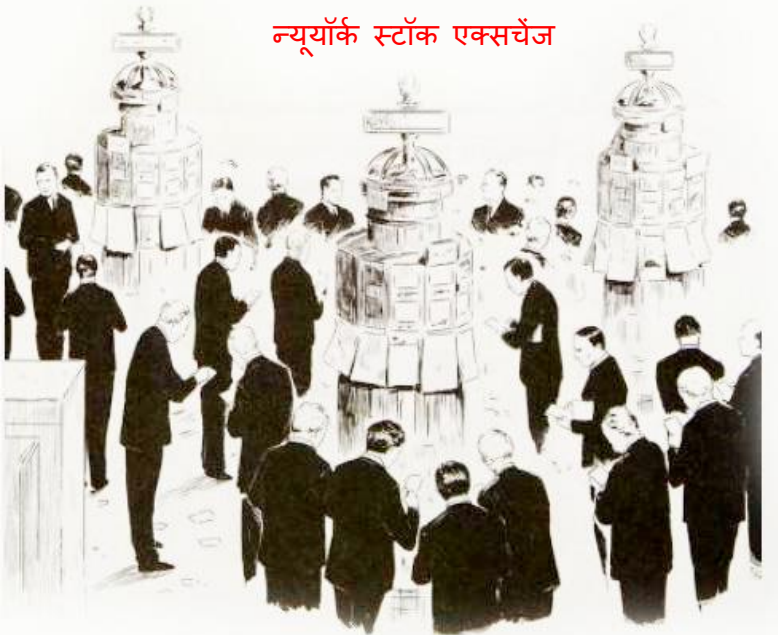
सरकार ने शेयर बाजार को नियंत्रित करने की कोशिश नहीं की. कुछ अर्थशास्त्रियों को लगा कि सरकार को वो करना चाहिए था. उन्होंने चेतावनी भी दी कि चीजें हाथ से बाहर निकल रही थीं. लोग बहुत उत्साहित थे और वे कूड़ा स्टॉक्स के लिए भी अधिक पैसे देने को तैयार थे. किसी दिन कीमतें गिरेंगी, और बहुत से लोग अपना बहुत सारा पैसा खो देंगे. लेकिन उनकी बात अभी कोई सुनना नहीं चाहता था.

स्टॉक की कीमतें इतनी अधिक हो गईं कि उनका वास्तविकता से कोई लेना-देना नहीं रह गया था. अगर लोग अफवाह सुनते कि फलां कंपनी गर्म है, तो वे बिना यह सोचे कि कंपनी के पास बेचने लायक कुछ है या नहीं, उसके स्टॉक खरीद लेते. फिर वे उन्हें जल्दी से अधिक कीमत पर बेच देते. अगला खरीदार उन्हें और भी अधिक पैसों में बेचता, इत्यादि. इस अनियंत्रित वृद्धि को "बबल" या बुलबुला कहा जाता है. बुलबुले केवल स्टॉक के साथ नहीं होते हैं. 1637 में हॉलैंड में शुरुआती बुलबुले में "ट्यूलिप-बल्ब" शामिल थे. लोग ट्यूलिप को लेकर इतने उत्साहित हो गए कि वे एक ट्यूलिप बल्ब के लिए पूरे घर के मूल्य के बराबर की कीमत देने को तैयार थे.

जब तक लोग उन्हें खरीदने के लिए उत्सुक रहते हैं, तब तक स्टॉक शेयरों की कीमत बढ़ती जाती है और फिर उनका वास्तविक कीमत से कोई संबंध नहीं होता है. फिर धीरे-धीरे बुलबुला बड़ा और बड़ा होता जाता है.

पर बुलबुलों के साथ बस एक परेशानी यह है कि वे फट जाते हैं. अंत में, कीमत इतनी अधिक हो जाती है कि हर कोई आश्चर्य करने लगता है कि क्या वो स्टॉक वास्तव में उतनी कीमत के लायक है? जो लोग सही समय पर बेच देते हैं वे ठीक-ठाक रहते हैं. पर जो ऐसा नहीं करते हैं उनके गले में कूड़ा स्टॉक, एक फंदा बनकर अटक जाते हैं. यह कुछ-कुछ गर्म-आलुओं के खेल जैसा है.

फ्लोरिडा लैंड "बबल"

1920 के दशक में, भूमि डेवलपर्स ने फ्लोरिडा को स्वर्ग के रूप में वर्णित किया. हर कोई वहां जमीन खरीदना चाहता था. फ़्लोरिडा में ज़मीन के प्लाट इतने गर्म हो गए कि कुछ को एक ही दिन में दस बार खरीदा और बेचा गया. कुछ खरीदारों ने तो बिना देखे ही जमीन खरीद ली. पर उसके बाद एक बड़ा तूफान आया. अचानक से कोई भी फ्लोरिडा में जमीन खरीदना नहीं चाहता था. लोगों ने पाया कि उनके प्लाट किसी दलदल में या पानी के भीतर थे. उनका सारा पैसा डूब गया था.

अध्याय 2
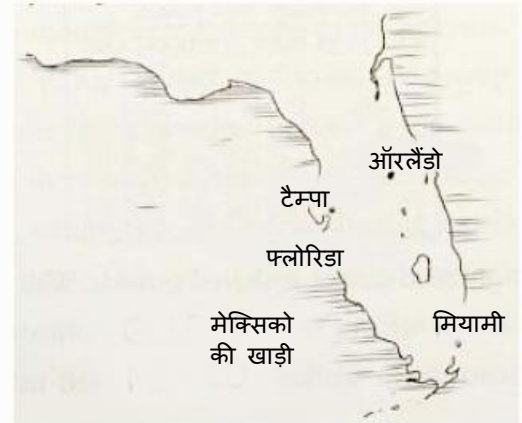
बुलबुला फूटता है

1929 का शेयर बाजार का बुलबुला एक ज़ोरदार धमाके के साथ फूट पड़ा. 24 अक्टूबर 1929 का दिन "काले गुरुवार" के नाम से जाना जाता है. उस दिन, शेयरों की कीमतें गिरने लगीं और फिर लगातार गिरती रहीं. फिर हर कोई अपने स्टॉक बेचना चाहता था. उससे कीमतों में और भी गिरावट आई. कीमतें इतनी तेजी से गिरीं कि कोई उन पर कोई नजर तक नहीं रख सका.

BROOKLYN DAILY EAGLE

WALL ST. IN PANIC AS STOCKS CRASH

व्यापार जगत के केंद्र वॉल स्ट्रीट के बाहर, भयभीत भीड़ जमा हो गई. किसी ने ऊंची इमारत के ऊपर एक निर्माण मजदूर को देखा.
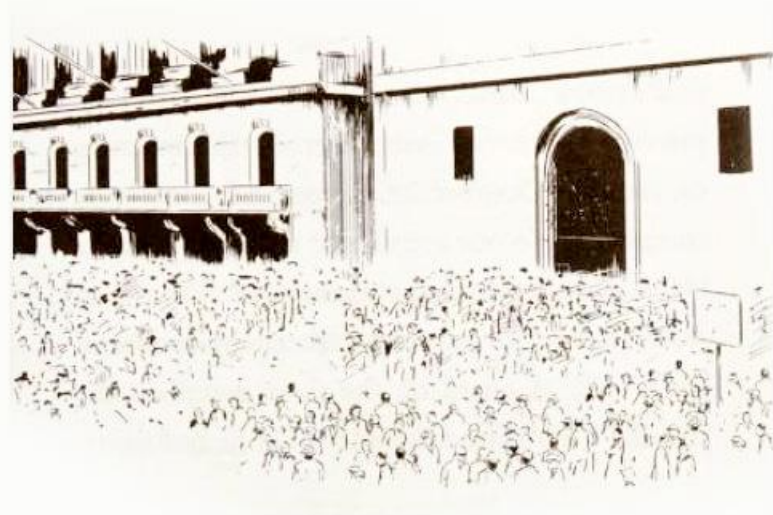
उन्होंने सोचा कि वो एक बर्बाद व्यापारी होगा जो खुदकशी कर रहा होगा. जल्द ही झूठी अफवाहें फैल रही थीं कि सैकड़ों करोड़पति, जिन्होंने अपना सारा पैसा खो दिया था, अब मरने के लिए ऊंची इमारतों से कूद रहे थे.

दोपहर तक दहशत खत्म हो गई. महत्वपूर्ण व्यवसायियों के एक समूह ने अपना पैसा जमा किया. उनमें से एक स्टॉक एक्सचेंज में गया. तेज, शांत स्वर में उसने ऊंचे दामों पर स्टॉक खरीदना शुरू कर दिये. इसने लोगों को आश्वस्त किया कि उनके स्टॉक आखिर सुरक्षित थे. कुछ दिनों के लिए कीमतें फिर से बढ़ने लगीं और सभी ने चैन की सांस ली.

लेकिन संकट खत्म नहीं हुआ था. सोमवार को कीमतों में और तेजी से गिरावट शुरू हुई. 29 अक्टूबर मंगलवार की सुबह तक दहशत पूरी तरह से हावी हो चुकी थी. वॉल स्ट्रीट स्टॉक ट्रेडिंग के उद्घाटन की घोषणा करने वाली घंटी बजने की आवाज़ किसी ने नहीं सुनी. "बेचो! बेचो!" के नारों में घंटी की आवाज़ डूब गई. फर्श पर मौजूद एक गार्ड ने भीड़ का वर्णन किया: "वे शेरों और बाघों की तरह दहाड़ रहे थे.... वो किसी पागलों के झुंड की तरह था."

उस दिन पहले से कहीं अधिक शेयर बेचे गए. हर बिक्री के साथ लोगों ने अपना पैसा खोया. लाखों डॉलर शून्य में विलीन हो गए.

स्टॉक की कीमतें देश भर में टेलीग्राफ द्वारा कागज की लंबी पट्टियों पर भेजी जाती थीं जिन्हें "टिकर टेप" कहा जाता था.

टिकर एक मिनट में 285 शब्द प्रिंट कर सकता था. उस दिन पंद्रह हजार मील लम्बा "टिकर टेप" छपा था. लेकिन वो काफी नहीं था. "टिकर टेप" मशीन चार घंटे पीछे थी. इसका मतलब यह हुआ कि किसी को यह भी पता नहीं चल सका कि उसका कितना पैसा डूबा था.

टेलीग्राफ

टेलीग्राफ, तार द्वारा विद्युत संकेत भेजने का एक तरीका है. अमेरिका में, इसे सैमुअल मोर्स द्वारा विकसित किया गया था, जिसकी शुरुआत 1837 में हुई थी. टेलीग्राफ से पहले, देश के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में समाचारों को पहुंचने में कई दिन लगते थे. टेलीग्राफ के साथ लगभग तुरंत संदेश भेजना संभव था. शेयर बाजार में उछाल के दौरान, वॉल स्ट्रीट से पूरे अमेरिका में स्टॉक की कीमतों की जानकारी भेजी गई थी. यह लोगों के लिए स्थानीय स्टॉकब्रोकर के कार्यालय में इकट्ठा होने और अपने शेयरों के मूल्य में वृद्धि देखने के लिए एक लोकप्रिय तरीका बन गया था.

सैमुअल मोर्स

29 अक्टूबर, ब्लैक मंगलवार, अमेरिकी अर्थव्यवस्था में सबसे खराब दिन था. लेकिन किसी को समझ नहीं आया कि आखिर हुआ क्या था. प्रसिद्ध बैंकर और व्यवसायी जनता को बताते रहे कि बुरा समय बीत चुका था. अर्थव्यवस्था अभी भी मजबूत और स्थिर थी.

वे गलत थे.

बाज़ार के क्रैश के बाद, लोगों को पता चला कि वे किसी कल्पना जगत में जी रहे थे. शेयर बाजार में उछाल सच्चाई को छुपा रही थी. यहां तक कि सबसे रोमांचक समय के दौरान, केवल कुछ ही अमेरिकी वास्तव में अमीर हुए थे. बाकी अभी और पैसा खर्च खो रहे थे. दो बड़े समूह वास्तव में गरीब होते जा रहे थे - अकुशल कारखाने के श्रमिक और किसान.

कई लोग इस विचार में विश्वास करते थे कि हर कोई अमीर हो सकता था. लोगों ने अपने लिए चीज़ों को किश्तों पर खरीदना शुरू किया. अमीरों और गरीबों के बीच की खाई बड़ी, और बड़ी होती जा रही थी. 1929 तक, अमेरिका के चंद सबसे बड़े धनी लोग, देश के सभी किसानों की तुलना में अधिक धनी बन गए थे.

हमेशा खुशहाली का विचार अब लोगों को एक वास्तविक लगने लगा था. आंशिक रूप से ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि अब खरीदने के लिए बहुत सारी चीज़ें उपलब्ध थीं. असेंबली लाइनों ने, सस्ते उपकरणों का उत्पादन करना पहले से कहीं अधिक तेज़ और आसान बना दिया था.

कारखाने सैकड़ों रेडियो, वैक्यूम क्लीनर, वाशिंग मशीन और विशेष रूप से ऑटोमोबाइल बना रहे थे. लेकिन उन सभी को खरीदने के लिए पर्याप्त लोग नहीं थे. अमेरिकी कंपनियां जितना बेच सकती थीं, वे उससे अधिक उत्पादन कर रही थीं.

बाज़ार के दिवालिया पिटने के बाद, कुछ करोड़पतियों ने खुद को एकदम कंगाल पाया. लेकिन कई लोगों को समय पर असलियत समझ में आ गई. उन्होंने कम-से-कम अपने लिए कुछ बचा लिया. पर जिन लोगों को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ, वे सामान्य लोग थे, जो चलती हवा में बहक गए थे. जिन लोगों ने उधार के पैसों से स्टॉक खरीदे थे, उन्हें अब पता चला कि उन्होंने कितना बड़ा जोखिम उठाया था. उनके स्टॉक अब कूड़ा थे, लेकिन उन्हें फिर भी अपना कर्ज चुकाना था.

अपार धनवानों की जीवन शैली

महामंदी के दौरान हर कोई गरीब नहीं हुआ. वूलवर्थ के डिपार्टमेंट स्टोर के संस्थापक की पोती बारबरा हटन ने 1930 में न्यूयॉर्क के रिट्ज-कार्लटन होटल में अपनी पहली नृत्य पार्टी रखी. चांदनी बगीचे की तरह दिखने के लिए होटल को सजाया गया. सिर्फ फूलों की कीमत 60,000 डॉलर होने की अफवाह थी. बारबरा ने पेरिस से मंगाई एक साटन की पोशाक पहनी थी. चार आर्केस्ट्रा संगीत बजा रहे थे. एक हजार मेहमानों को शैंपेन परोसा गया था - भले ही वो निषेध होने के कारण अवैध था. 1933 में जब वो इक्कीस वर्ष की थीं, तब तक बारबरा हटन की हैसियत 5 करोड़ डॉलर की थी.

अध्याय 3

बैंक फेल

जिन लोगों ने शेयर बाजार में निवेश नहीं किया था, वे अब खुदको पुरस्कृत महसूस कर रहे थे. वो लालच में नहीं आए थे इसलिए उनका पैसा अभी भी बैंक में सुरक्षित था. लेकिन अफसोस की बात यह थी, कि वैसा नहीं था.

बैंक भी मुश्किल में फंसे थे. उछाल के वर्षों के दौरान, बैंकों ने उन ग्राहकों को बहुत सारा पैसा उधार दिया था जो स्टॉक खरीदना चाहते थे. अब बहुत से लोग ऋण वापस नहीं कर पा रहे थे. इससे भी बदतर, कई बैंक खुद भी शेयर बाजार में जुआ खेल चुके थे और वे कंगाल हो गए थे.

बैंक, जमा किए गए अधिकांश पैसे को अपने पास नहीं रखते हैं. वे उन्हें कंपनियों को ब्याज पर उधार देते हैं. इस तरह बैंक मुनाफा कमाते हैं. लेकिन अब, हर जगह अफवाहें थीं कि बैंकों ने अपना सारा पैसा खराब-क़र्ज़ (बैड-लोन) में देकर खो दिया था. सभी लोगों को डर था कि कहीं उनका बैंक फेल न हो जाए. इसलिए जल्द ही लोग अपने-अपने पैसे निकालने के लिए बैंकों में दौड़ पड़े.

बैंकों के बाहर भारी भीड़ उमड़ पड़ी. लाइन में लगे पहले ग्राहकों को उनके पैसे मिल गए. लेकिन बहुत से लोग एक ही समय पर अपना पैसा वापस चाहते थे. जल्द ही बैंकों के पास हाथ में रखी छोटी नकदी खत्म हो गई. तब उन्हें अपने दरवाजे तब तक बंद करने पड़े जब तक कि लोग, बैंक से उधार लिए पैसों को वापस नहीं करते. लेकिन कुछ बैंकों ने अपने बहुत अधिक पैसे, ऐसे शेयरों में निवेश किये थे जिनकी कीमत अब शून्य हो गई थी. वो बैंक डूब गए. वो बैंक हमेशा के लिए बंद हो गए.

बैंकों के फेल होने की भारी लहर पूरे देश में फैल गई. 1933 तक लगभग ग्यारह हजार बैंक फेल हो चुके थे. वो अमेरिका में लगभग आधे बैंक थे. जिस किसी ने भी अपनी बचत, बंद होने वाले बैंक में जमा की थी, वो सब डूब गई थी.

बैंक विफलताओं के बारे में सबसे बुरी चीज यह थी कि उसका डर दूर- दूर तक फैला. यहां तक कि जिन लोगों ने पैसा नहीं गंवाया था, वे भी अब बैंकों का इस्तेमाल करने से डरने लगे. जो बैंक अभी भी खुले थे वे ज़िंदा रहने के लिए संघर्ष कर रहे थे. बैंकों ने मांग की कि लोग उनका ऋण चुकायें. यदि कोई व्यक्ति क़र्ज़ नहीं चुका पाता, तो बैंक उसके स्वामित्व वाली मूल्यवान वस्तु को जब्त कर लेते. इस तरह कई लोगों ने अपने घर और खेत खोए.

अमेरिकी अर्थव्यवस्था ताश के पत्तों की तरह ढह गई. प्रत्येक विफलता ने लोगों को गरीब और अधिक भयभीत बनाया. उसने चीजों को और खराब कर दिया और अधिक विफलताओं को जन्म दिया. पैसे वाले लोग अब कुछ भी खर्च करने से डरते लगे. अचानक उन सभी कारों और रेडियो और इलेक्ट्रिक गैजेट्स को कोई नहीं खरीद रहा था. इसलिए जो फैक्ट्रियां उन्हें बनाती थीं उनका भी धंधा चौपट हो गया था.

फैक्ट्रियों में काम करने वाले सभी लोगों की नौकरी चली गईं. बेरोजगारी बढ़ी. फिर बहुत कम लोगों के पास ही जीने के लिए पर्याप्त साधन बचे.

1933 तक, नौकरी की तलाश में चार में अमेरिकियों में से एक अमरीकी को नौकरी नहीं मिली. अश्वेतों में आधे से अधिक बेरोजगार थे. अमेरिका का डिप्रेशन या महामंदी फिर बाकी दुनिया में फैल गई.
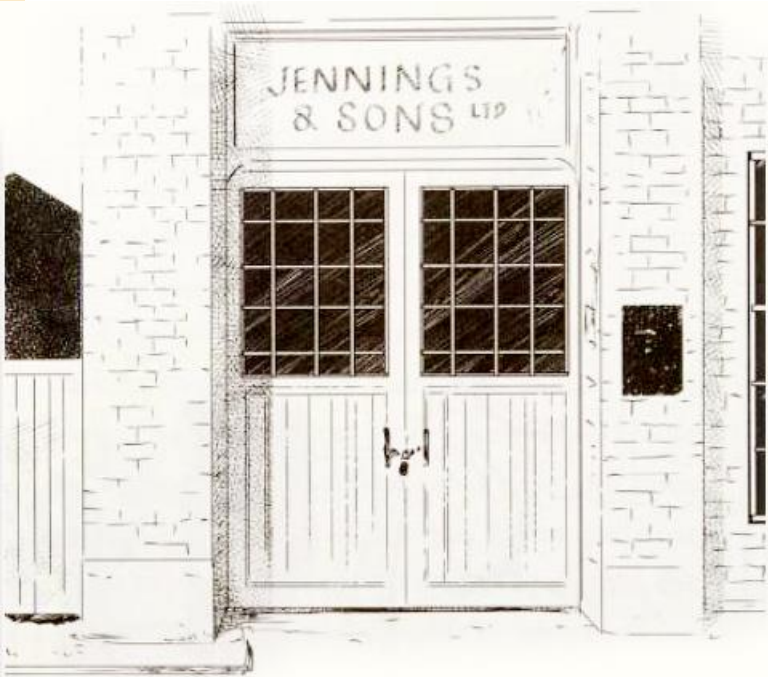
अध्याय 4

हूवरविल्स और होबोज़

महामंदी भयानक पीड़ा लेकर आई. महामंदी उन लोगों के लिए सबसे बुरी थी जो शुरुआत में ही सबसे गरीब थे - किसान और फैक्ट्रियों के कर्मचारी. नौकरी गंवाने वाले कई लोगों को कोई दूसरा काम नहीं मिला. बैंकों के फेल होने पर कुछ ने अपनी पूरी बचत खो दी. जब वे किराए का भुगतान नहीं कर पाए, तो उन्हें उनके घरों से बाहर निकाल दिया गया. उनमें से कुछ अपने रिश्तेदारों के साथ रहने में सक्षम हुए, लेकिन बहुतों ने जल्द ही खुद को सड़कों पर पाया.

हजारों बेघरों ने खाली पड़े मैदानों में, झोंपड़ियों और झोपड़-पट्टियां बनाईं. लोगों को जो कुछ भी मिल पाया उससे उन्होंने अपनी झोंपड़ी बनाई – टाट, गत्ता, फेंके हुए साईन बोर्ड, पुराने टायर और स्क्रैप धातु. झोंपड़ियों में से किसी में भी बिजली या बहता पानी नहीं था. फिर बीमारियां फैलने लगीं.

अधिकांश शहरों ने झोपड़-पट्टियों को स्वास्थ्य के लिए खतरा माना और उन्हें नष्ट करने की कोशिश की. लेकिन लोगों ने दुबारा फिर वहीं पर झोपड़-पट्टियां बनाईं. बेघरों के पास जाने के लिए और कोई जगह ही नहीं थी.

कुछ बस्तियों में बस कुछ ही झोंपड़ियां थीं. लेकिन कुछ में कई हजार लोग एक-साथ रहते थे. सबसे बड़ी-बड़ी झोपड़-पट्टियां छोटे शहरों में विकसित हुईं जहाँ पर अनौपचारिक "महापौर" थे.

महापौरों के पास जगह को साफ और सुरक्षित रखने और आग से बचाव करने के नियम थे. कुछ शहरों में घरों के नंबर वाली गलियां भी थीं, ताकि लोगों को डाक मिल सके. झोंपड़ियों में रहने वाले ज्यादातर लोग अविवाहित थे, हालांकि कुछ झोंपड़ियों में पूरे परिवार भी रहते थे.

इन बस्तियों को "हूवर-विले" कहा जाता था. यह राष्ट्रपति हूवर की तारीफ नहीं थी. उन्होंने कहा था राष्ट्र बस समृद्धि की कगार पर था. बिना घर वाले लोग उनसे नाराज़ थे. लोग अखबारों को "हूवर-कंबल" बुलाते थे और खुद को गर्म रखने के लिए वे अपने शरीर को अखबार से ढंकते थे. जूतों में छेद को कवर करने के लिए उपयोग किए जाने वाले कार्डबोर्ड को "हूवर-लेदर" बुलाया जाता था. और एक "हूवर-फ्लैग" अंदर से बाहर की गई पॉकेट थी, जो दिखाती थी कि उसके मालिक के पास एक फूटी कौड़ी तक नहीं थी.

कुछ देर के लिए न्यूयॉर्क शहर की सड़कें सेब बेचने वालों से भर गईं. सेब उत्पादक जिन्हें अपनी फसल का अच्छा मूल्य नहीं मिला उन्होंने बेघर लोगों को बहुत सस्ते में फलों की पेटियां बेंच दीं. फिर तमाम लोगों ने सड़क पर फलों को बेंचा. अकेले न्यूयॉर्क शहर में लगभग छह हजार लोग सेब बेच रहे थे. लेकिन बहुत कम लोग ही उन सेबों को खरीदने में सक्षम थे.

ज़्यादातर शहरों में ज़रूरतमंदों की मदद करने के कुछ तरीके पहले से ही मौजूद थे. लेकिन दान कार्यक्रम इतनी बड़ी संख्या में भूखे लोगों को संभाल नहीं सके. हताश पुरुषों और महिलाओं ने भोजन खोजने के लिए वो सब किया जो वो कर सकते थे. कुछ हूवर-विलों में सब्जी उगाने के छोटे खेत थे. लोगों ने वहां पर खरगोशों का शिकार किया, जिन्हें "हूवर-हॉग" – यानि गरीब आदमी के बेकन के रूप में जाना जाने लगा. (दक्षिण में, "हूवर-हॉग" आर्मडिलो का नाम पड़ा.)

कचरे के ढेर पर लोगों की लाइनें लगी रहती थीं जो रेस्तरां के फेंके हुए भोजन के ट्रकों की प्रतीक्षा कर रहे होते थे. माताओं ने अपने बच्चों को अजनबियों के दरवाजे की घंटी बजाने के लिए भेजा. उन्हें उम्मीद थी कि जो कोई भी दरवाज़ा खोलेगा वो भूखे बच्चों पर रहम करेगा और उन्हें खाने के लिए कुछ देगा.

बहुत से लोगों ने ब्रेडलाइन और सूप किचन की ओर रुख किया. इन जगहों को निजी दान संस्थाओं द्वारा चलाया जाता था. शिकागो में पहली सूप रसोई एक गैंगस्टर अल कैपोन द्वारा चलाया गई थी. पूरे देश में, डबलरोटी के लिए लोगों की लम्बी लाइनें, आम थीं.

हूवर-हॉग

लोग डबलरोटी के लिए एक ब्लॉक से दूसरे ब्लॉक तक लम्बी लाइन में खड़े होते थे. वे घर वापस लाने के लिए एक रोटी का इंतजार करते थे. ये लोग अपने परिवार का भरण-पोषण करने के आदी थे. कई लोगों को, सार्वजनिक रूप से भीख मांगते हुए बहुत शर्म आती थी. लेकिन उनके पास कोई चारा नहीं था. इससे भी बदतर, कभी-कभी नंबर आने से पहले ही डबलरोटी खत्म हो जाती थी. यह एक कारण था कि सूप अधिक लोकप्रिय था. रसोई में सूप की अधिक मात्रा बनाने के लिए उसमें मर्ज़ी के मुताबिक़ और अधिक पानी मिलाया जा सकता था. न्यूयॉर्क शहर में, एक दिन में कम-से-कम 82 हज़ार भोजन निःशुल्क दिए जा रहे थे.

मंदी के सबसे बुरे दौर में भी आम जनजीवन थमने का नाम नहीं ले रहा था. अधिकांश अमेरिकी अभी भी काफी सामान्य जीवन जी रहे थे. अधिकांश लोगों के पास अभी भी नौकरी थी. स्कूल, दुकानें और रेस्तरां अभी भी मौजूद थे. अर्थव्यवस्था साथ-साथ चलती रही थी और वो पूरी तरह से विफल नहीं हुई थी. हालांकि, जो लोग अच्छी ज़िंदगी जी रहे थे वे भी डरे हुए थे. उन्होंने पुराने कपड़े पहने और इस्तेमाल किए गए कागज और डोरी के टुकड़ों को बचाया और खाने में सस्ती चीज़ें मिलायीं जिससे उनका भोजन कुछ अधिक दिन चल सके.

मुफ्त मनोरंजन जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया. उदाहरण के लिए, बोर्ड-गेम बहुत लोकप्रिय हो गए.
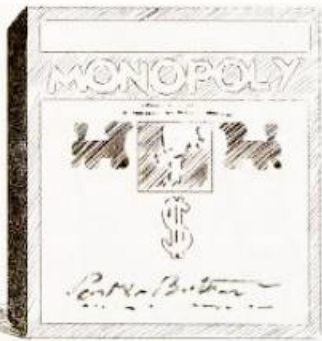
1930 के दशक में लोगों ने "मोनोपोली" (व्यापार) खेलना शुरू किया. इस खेल में खिलाड़ियों को यह दिखावा करना पड़ता था कि वे धनी व्यापारी थे. फिर वे बड़ी-बड़ी प्रॉपर्टी खरीदने के लिए एक-दूसरे से लड़ते थे.
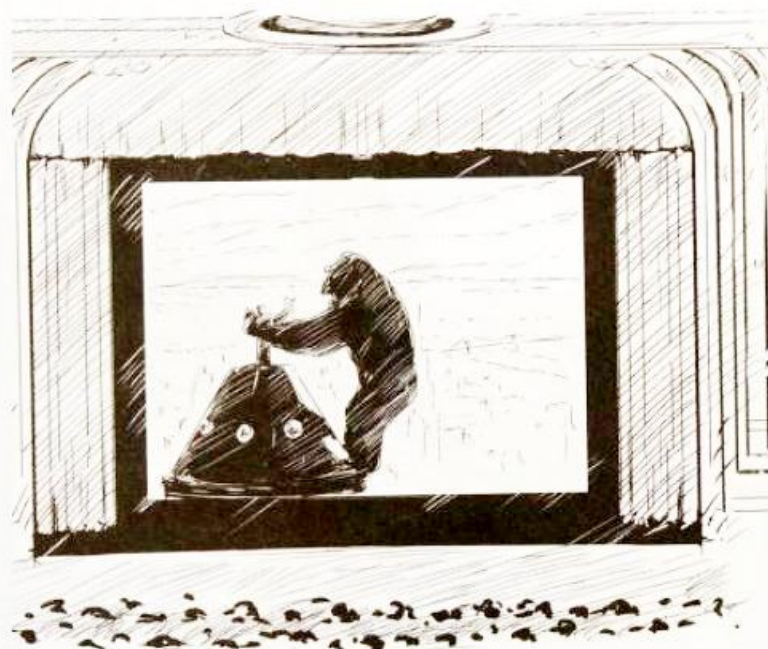
सोप ओपेरा, कॉमेडी और साहसिक कहानियों को सुनने के लिए पूरे परिवार रेडियो के सामने इकट्ठा होते थे. जिन लोगों की सामर्थ थी वे किंग कांग और शर्ली टेम्पल एक्टर्स की फिल्में देखने जाते थे. फिल्में दैनिक जीवन की कठिनाईयों से गरीब लोगों को एक अच्छा निजात दिलाती थीं.
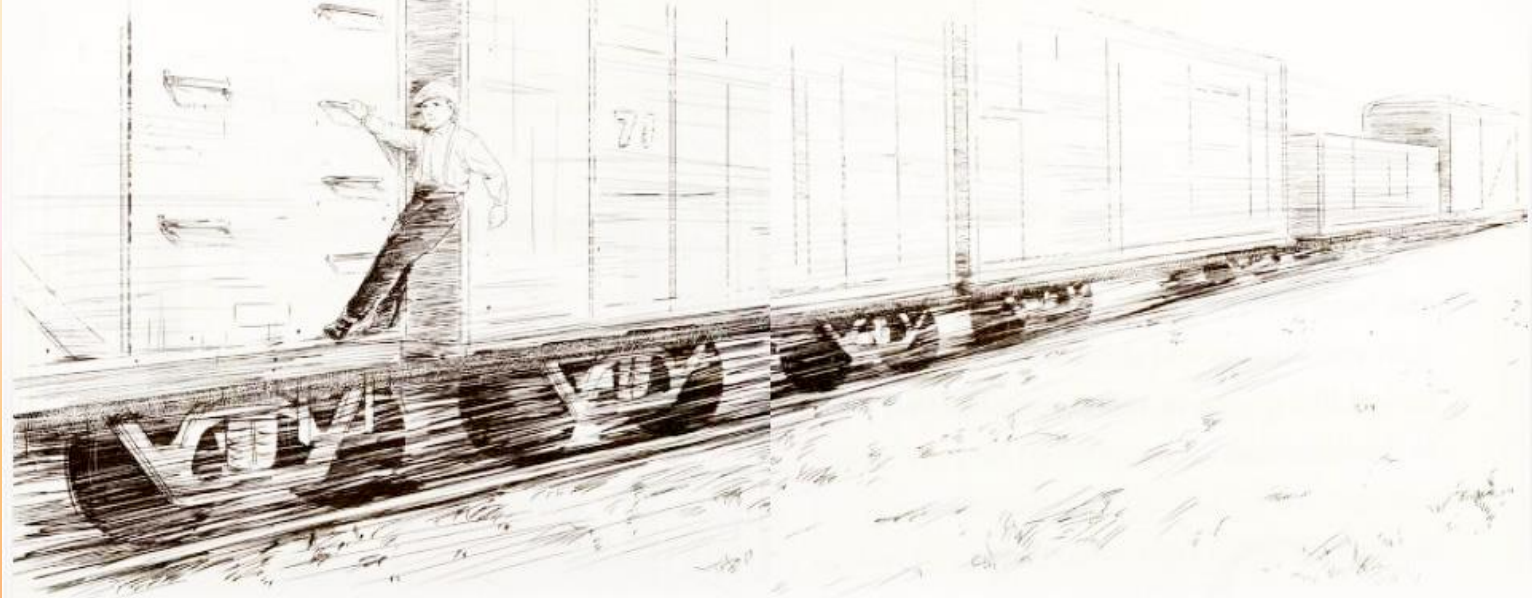
बहुत से पुरुषों को उम्मीद थी कि उन्हें कहीं और नौकरी मिल जाएगी. इसलिए, वे "होबो" बनकर, नौकरी की तलाश में देश भर में घूमते थे. अधिकांश, मालगाड़ियों को रोककर उनमें यात्रा करते थे. ये बहुत खतरनाक था. चलती रेलवे कार में कूदना आसान नहीं था. चूंकि मालगाड़ी के डिब्बों को गर्म नहीं किया जाता था, इसलिए कभी-कभी "होबो" उनमें जम कर मर जाते थे. रेलरोड कंपनियों ने गाड़ियों से "होबो" को नीचे फेंकने के लिए सशस्त्र गार्ड किराए पर नियुक्त किए. उन्हें "बुल्स" बुलाया जाता था.

कम-से-कम ढाई लाख किशोर, जिनमें से कुछ ग्यारह वर्ष के थे, "होबो" बन गए. बहुत से युवाओं ने घर छोड़ दिया ताकि उनके परिवारों के पास खाने के लिए एक मुंह तो कम हो. कुछ रोमांच के विचार से भी उत्साहित थे. लेकिन उन्हें बहुत जल्दी से पता चल गया, कि सड़क पर जीवन रोमांचक नहीं था. किशोर "होबो" को रेल के गार्ड "बुल्स" गोली मारते थे, उन्हें शहर से बाहर खदेड़ते थे, जिससे कई "होबो" दुर्घटनाओं में मारे गए. वे कई दिनों तक बिना भोजन के रहे.

महान लोक गायक वुडी गुथरी एक किशोर के रूप में रेल की सवारी करते थे. उन्होंने बहुत भूखे और हताश लोगों के साथ यात्रा की और वो उस भावना को कभी नहीं भूले: "हम एक दूसरे को तकिए जैसे इस्तेमाल करते थे. मैं अपनी खाकी शर्ट और काम के कपड़ों से पसीने को सूंघ सकता था. हम खोई हुई लाशों के समूह जैसे दिखते थे जो वापिस कब्रिस्तान में जा रहे थे."

"होबो" लोग मुफतखोर नहीं थे. वे काम के लिए आतुर थे. कई ने देश भर में फसलों को काटा. वे जहाँ फसल पकी होती उसे काटने के लिए पहुंच जाते, और जब फसल खत्म होती तो वहां से चले जाते. लेकिन इतने सारे लोग काम के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे थे कि उन्हें लगभग कुछ भी वेतन नहीं मिलता था.

"होबो" के बीच एक मददगार समुदाय का उदय हुआ. उन्होंने हमेशा शहरों के प्रमुख रेल-यार्ड के पास अपने शिविर स्थापित किए. वहां जो कोई भी आता उसका रहने के लिए स्वागत किया जाता था. सभी अपना खाना जमा करके मिलकर खाते थे. एक खाना पकाने के बर्तन में जो जिसके पास होता वो डाल देता था, जिसे वे "मुलिगन-स्टू" बुलाते थे.

वुडी गुथरी

अध्याय 5

खेत खोना

पहले जब कभी कठिन समय आता तो किसान, शहरवासियों की तुलना में बेहतर ज़िंदगी जी पाते थे. बहुत बुरे हालात में भी वे कम-से-कम अपना पेट तो पाल सकते थे. लेकिन दुर्भाग्य से, महामंदी शुरू होने से पहले ही, कई अमेरिकी किसान पहले से ही संकट में थे.

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, वे काफी फले-फूले थे. सैनिकों को खिलाने के लिए पर्याप्त भोजन का उत्पादन करने के लिए सरकार को खेतों की आवश्यकता थी. सेना में कई किसान भर्ती हो गए थे, इसलिए किसानों ने उस काम को करने के लिए महंगे ट्रैक्टर और हार्वेस्टर खरीदे जो पहले मज़दूर करते थे. और उन्होंने फसल उगाने के लिए और अधिक जमीनें खरीदीं. ज़मीन खरीदने के लिए उन्होंने कर्ज लिया.

दुर्भाग्य से, युद्ध समाप्त हो जाने के बाद, सरकार उनसे बहुत अधिक भोजन नहीं खरीद रही थी. चूंकि खेतों में हर साल अधिक-से-अधिक उत्पादन हो रहा था, अचानक किसान अपनी फसल बेच नहीं पा रहे थे. उसने खाद्य कीमतों को इतना कम कर दिया कि किसानों को हर बिक्री में पैसा गंवाना पड़ा.
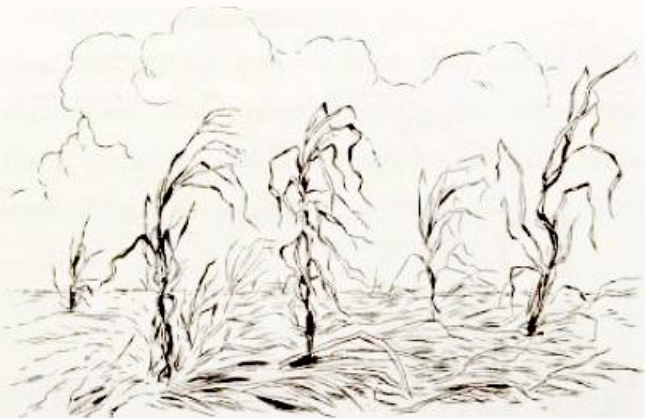
महामंदी के दौरान लोग भूखे मर रहे थे. फिर भी खेतों में खाना बर्बाद हो रहा था. किसानों के पास इतनी फसलें थीं जिन्हें वे काटने या बेचने का जोखिम नहीं उठा सकते थे. इसलिए गेहूं को, खेतों में सड़ने दिया गया. दूध को नाली में बहा दिया गया.

अगर किसान अपना कर्ज नहीं चुका पाते तो बैंक उनके खेतों को ज़ब्त कर लेता और उन्हें नीलाम कर देता. एक नीलामी में कई लोग उस चीज़ को खरीदने के लिए बोली लगाते हैं, फिर सबसे अधिक बोली लगाने वाले को वो चीज़ मिलती है. अमेरिकी किसानों में हमेशा अपने पड़ोसियों की मदद करने की एक मजबूत परंपरा रही थी. इसलिए अब वे किसान "नीलामी" के एक नए विचार के साथ वहां आए.

जब किसी का खेत बैंक ने ज़ब्त किया तो सभी पड़ोसी नीलामी में इकट्ठा होते. वे बाहरी लोगों को बोली नहीं लगाने देते थे. कभी-कभी वे यह सुनिश्चित करने के लिए पास के एक पेड़ से फंदा भी लटका देते थे जिससे कि उनका संदेश बाहरी लोगों को एकदम स्पष्ट समझ में आ जाए.
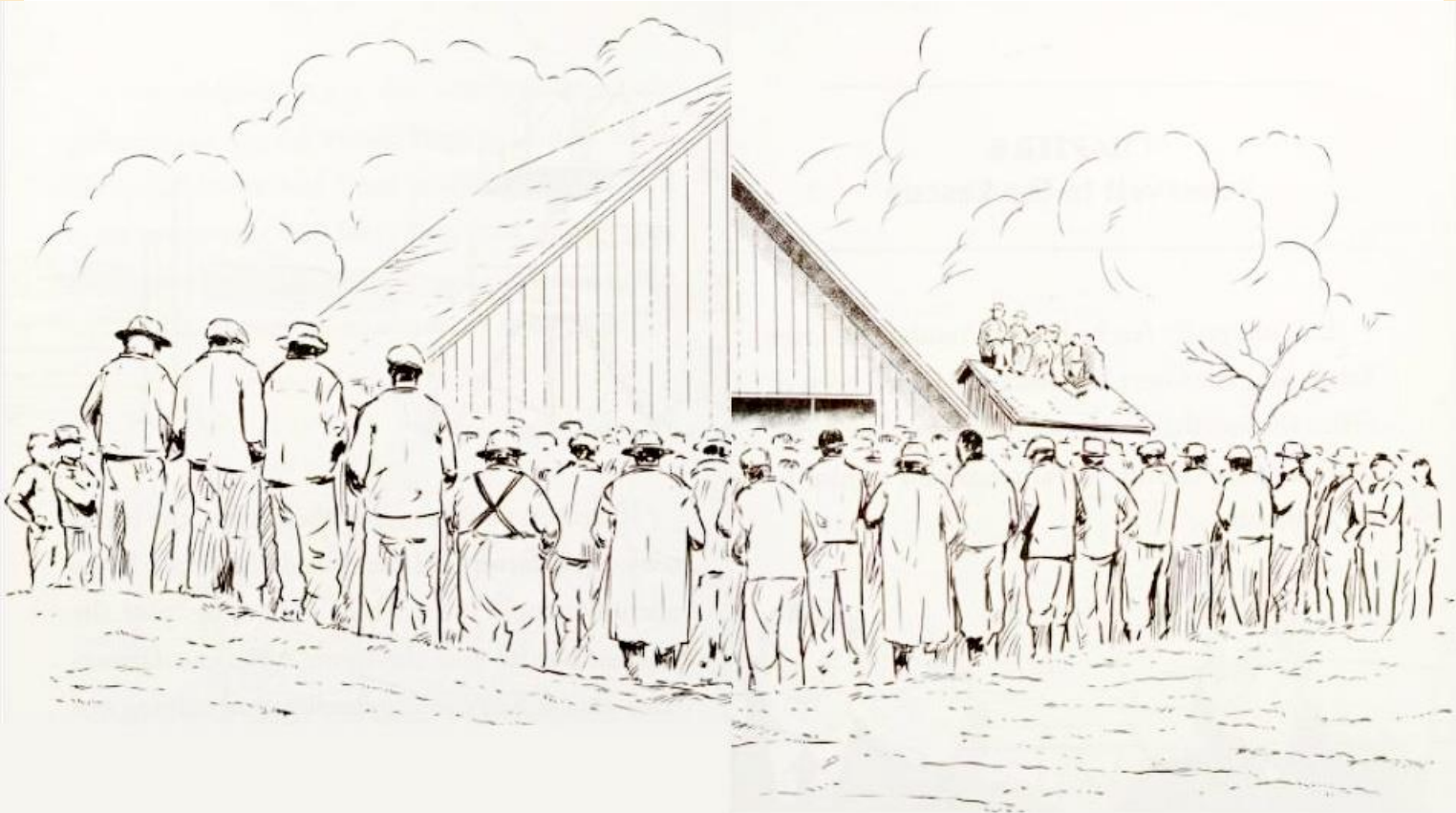
फिर पड़ोसी बेहद बेतुकी कम कीमतों की बोली लगाते थे. उदाहरण के लिए, कोई इंसान पाँच सेंट में एक गाय खरीद सकता था. जब किसान का सबकुछ नीलम हो चुका होता तो बैंक को सिर्फ कुछ डॉलर ही मिलते थे. उसके बाद खेत का नया "मालिक" मूल किसान को उसका सब कुछ वापस लौटा देता था.

लेकिन जैसे-जैसे अधिक-से-अधिक किसानों ने खुद को आर्थिक परेशानी में पाया, वैसे-वैसे नीलामी करना मुश्किल हो गया. 1932 तक, तीन में से एक किसान ने अपने खेत, बैंक को खो दिए थे.

अध्याय 6

बचाव के लिए रूजवेल्ट

महामंदी के लिए राष्ट्रपति हूवर को दोष देना वास्तव में उचित नहीं होगा. शेयर बाजार के टूटने के बाद वो आठ महीने से भी कम समय तक ही कार्यालय में रहे. फिर भी, लोगों को उनसे कुछ सार्थक करने की उम्मीद थी.

लेकिन सरकार को कितना करना चाहिए? उस समय, अधिकांश अर्थशास्त्रियों का मानना था कि सरकार को अर्थव्यवस्था में दखल नहीं देनी चाहिए. यह बात दुखद थी क्योंकि लोग बेहद पीड़ित थे. लेकिन अगर सरकार चीजों को ठीक करने की कोशिश करती तो उससे और भी बुरा हो सकता था. सरकार, अर्थव्यवस्था को अकेला छोड़ दे, तब समस्याएं अपने आप सुलझ जाएंगी. हो सकता है कुछ कमजोर या असहाय लोग अपनी आजीविका नहीं चला पाएं. लेकिन कोई भी सरकारी कार्रवाई सच में इन लोगों की मदद नहीं कर सकी. सरकारी हस्तक्षेप, अच्छाई की बजाए ज्यादा नुकसान करेगा. इन अर्थशास्त्रियों ने कहा कि वो प्रक्रिया काफी दर्दनाक थी, लेकिन आवश्यक थी.

कुछ मायनों में, हूवर इस मत से सहमत नहीं थे. उन्हें यह स्पष्ट लग रहा था कि "देश की मशीनरी" को फिर से चालू करने के लिए कुछ मदद की ज़रूरत होगी. उन्होंने व्यापारिक नेताओं से उन परियोजनाओं में निवेश करने को कहा जो अर्थव्यवस्था को मजबूत करें. लेकिन उन्होंने यह नहीं सोचा था कि सरकार को व्यवसायों को नियंत्रित करने के लिए कानून पारित करने चाहिए. उन्हें उम्मीद थी कि व्यवसायी अपने दम पर सही काम करेंगे.

हूवर का मानना था कि सरकार को दान में पैसा नहीं देना चाहिए. लेकिन उन्हें लगता था कि सरकार कुछ भूमिका ज़रूर निभा सकती थी. सरकार, निजी धर्मार्थ संस्थाओं को अच्छी सलाह देकर उनकी मदद कर सकती थी. सरकार कुछ सार्वजनिक परियोजनाओं की भी सहायता कर सकती थी जिनसे रोजगार पैदा होते. उनमें से सबसे महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट, कोलोराडो नदी पर हूवर बांध था. हूवर बांध आसपास के क्षेत्र के लिए बिजली और सिंचाई प्रदान करता.
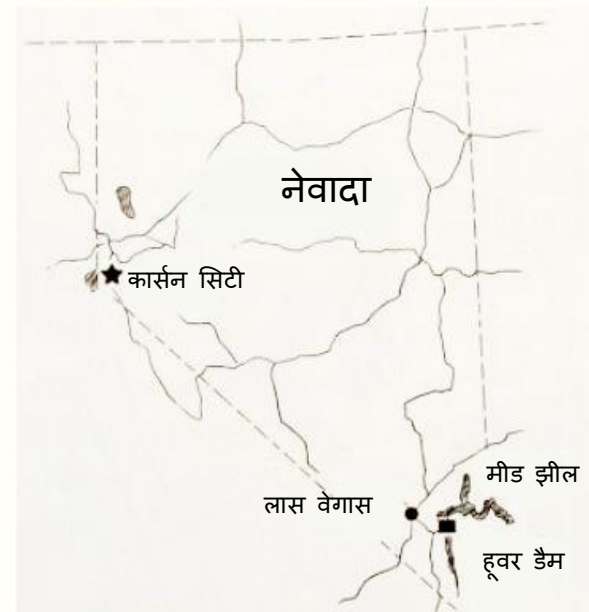
हूवर डैम की ऊंचाई पर काम करते हुए लोग

हूवर डैम को बनाने से करीब पांच हजार लोगों को काम मिला. लेकिन करीब बीस हजार लोग इन नौकरियों को पाने की उम्मीद में वहां आए.

हूवर का दृढ़ विश्वास था कि करों में कटौती से अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने में मदद मिलेगी. उन्होंने बैंकों, रेलमार्गों और बीमा कंपनियों के लिए सरकारी ऋण की व्यवस्था भी की. आलोचकों ने कहा कि हूवर केवल उन करोड़पतियों की मदद कर रहे थे जिनके पास पहले से ही पैसा था.

हूवर एक बहुत ही दृढ़ विश्वास से प्रेरित थे. सरकार को कभी भी लोगों को सीधे पैसे देने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, चाहे परिस्थिति कितनी भी खराब क्यों न हो. इससे लोगों की स्वतंत्रता छिन जाएगी. उससे वो भावना नष्ट हो जाएगी जिसने अमेरिका को एक महान देश बनाया था. इसलिए भूखे मवेशियों को खिलाने के लिए सरकारी धन का उपयोग करने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं की. उससे पशु व्यवसाय में मदद मिलती. लेकिन उन्होंने एक ऐसी योजना के लिए "नहीं" कहा जो भूखे किसान परिवारों को खिलाने के लिए पैसे देगी. वो एक दान होता.

हूवर का मानना था कि गरीब लोगों को दान देना निजी दान संस्थाओं का काम था. 1931 में, उन्होंने घोषणा की कि रेड-क्रॉस किसी भी जरूरतमंद की मदद के लिए उपलब्ध थी. "कोई भूखा नहीं रहना चाहिए और किसी को भूखा या ठंडा नहीं रहना चाहिए," उन्होंने जोर देकर कहा.

वो गलत थे.

1932 तक लगभग आधा देश, गरीबी में जी रहा था. लोग भूख से मर रहे थे. निजी संस्थाएं इतनी बड़ी समस्या का सामना नहीं कर सकती थीं.
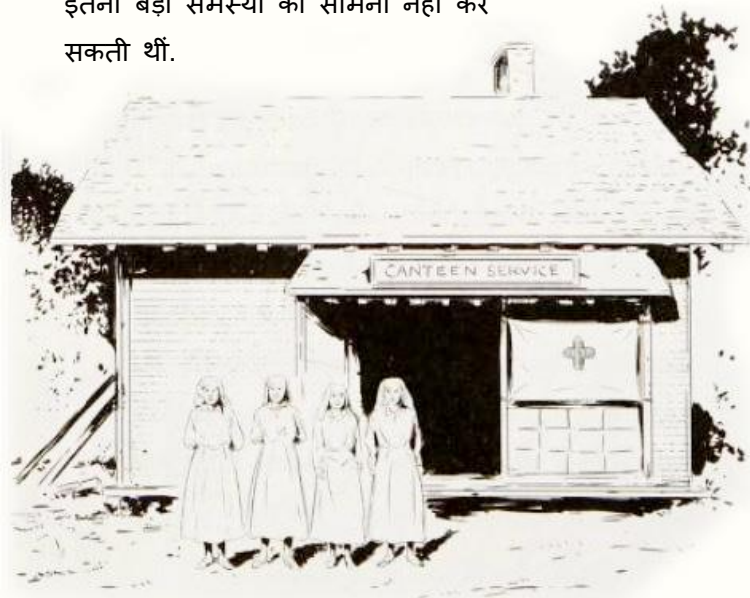
एपलाचियन पहाड़ों में, देश के एक बहुत ही गरीब हिस्से में कुछ बच्चों ने खरबूजे खाए या अपने हाथों को चबाया. वहां एक शिक्षिका ने एक छोटी बच्ची से पूछा कि क्या उसने उस दिन खाना खाया था. बच्ची ने उत्तर दिया, "आज मैं नहीं खा सकती. आज मेरी बहन के खाने की बारी है."

राष्ट्रपति हूवर देश के सबसे अलोकप्रिय व्यक्तियों में से एक बन रहे थे. अल्बानी में, न्यूयॉर्क के गवर्नर उन्हें करीब से देख रहे थे. उसका नाम फ्रैंकलिन डेलानो रूजवेल्ट था, जिन्हें अक्सर एफडीआर के नाम से जाना जाता था. रूजवेल्ट का मानना था कि सरकार को उस हर व्यक्ति मदद करने के लिए मौजूद होना चाहिए जिसे मदद की जरूरत हो. उनके अनुसार अपनी नौकरी खोने से पहले उन लोगों ने देश के विकास में अपना योगदान दिया था. अब देश को उनके लिए कुछ करना चाहिए था.

उन्होंने न्यूयॉर्क राज्य में एक एजेंसी की स्थापना की, जिसे अस्थायी आपातकालीन राहत प्रशासन (TERA) टेम्परारी इमरजेंसी रिलीफ एडमिनिस्ट्रेशन कहा जाता था. TERA ने सुनिश्चित किया कि बेरोजगार लोगों के पास जीवित रहने के लिए पर्याप्त पैसे हों. उसने रोजगार पैदा करने का भी काम किया. वो स्कीम सरकार द्वारा चलाया जाती थी, किसी निजी दान संस्थान द्वारा नहीं, और टैक्स के पैसों से उसका भुगतान किया जाता था. रूजवेल्ट पूरे अमेरिका में TERA जैसे कार्यक्रम देखना चाहते थे. इसलिए, उन्होंने राष्ट्रपति पद के लिए खड़े होने का फैसला किया.

1932 में, एक और संकट ने हूवर को और भी अलोकप्रिय बना दिया. 1924 में वापस, कांग्रेस ने प्रथम विश्व युद्ध में लड़ने वाले सभी लोगों को बोनस देने के लिए मतदान किया था. लेकिन फिर सरकार ने बोनस का भुगतान 1945 तक नहीं किए जाने का ऐलान किया. हालांकि, पूर्व सैनिक अब बोनस का पैसा चाहते थे. मई में, पंद्रह हजार से अधिक पूर्व सैनिकों ने अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ वाशिंगटन तक मार्च किया. वे एक विशाल झोपड़-पट्टी वाली बस्ती में बस गए और सरकार की सहमति का इंतजार करते रहे. पर सरकार सहमत नहीं हुई. सीनेट ने जल्दी बोनस का भुगतान करने के लिए "नहीं" कहा.

सभी को डर था कि इस फैसले के बाद हिंसा होगी. लेकिन पूर्व सैनिकों ने "अमेरिका द ब्यूटीफुल" का कोरस गाया और चुपचाप अपने शिविर में लौट आए.

हालांकि, उनमें से कई ने वाशिंगटन नहीं छोड़ा, हालांकि हूवर ने कहा कि सरकार उनके घर की वापिस यात्रा के लिए पैसे देगी.
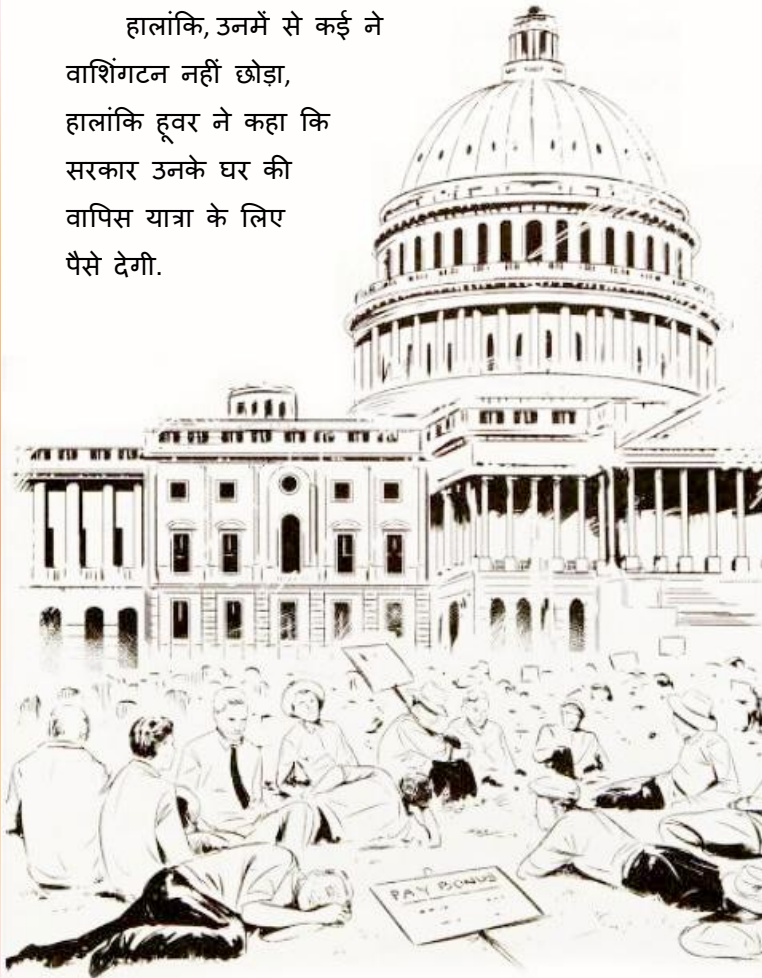
अंत में, 28 जुलाई को, हूवर ने पुलिस को सभी पूर्व सैनिकों को बाहर निकालने का आदेश दिया. कुछ पूर्व सैनिकों ने इसका विरोध किया. दो की गोली मारकर हत्या कर दी गई. फिर हूवर ने सेना भेजी. सेना ने संगीनों, आंसू गैस और टैंकों का उपयोग करते हुए निहत्थे पूर्व सैनिकों को खदेड़ दिया और उनके शिविर को तहस-नहस करके जला डाला.

जब रूजवेल्ट ने समाचार सुना, तो उन्होंने कहा, "ठीक है, अब लोग मुझे ज़रूर चुनेंगे."

वो सही थे. 1932 के नवंबर में, उन्हें भारी वोटों से राष्ट्रपति चुना गया. रूजवेल्ट ने एक भाषण में घोषणा की, "मैं आपसे प्रतिज्ञा करता हूं, मैं अमेरिकी लोगों के लिए एक नया-सौदा (न्यू-डील) लाने के लिए खुद से प्रतिज्ञा करता हूं." अब उन्हें अपने शब्दों पर कुछ कार्यवाही करनी थी.

फ्रैंकलिन डेलानो रूजवेल्ट (एफडीआर)

फ्रैंकलिन डेलानो रूजवेल्ट गरीबों के रक्षक बनने के लिए शायद उपयुक्त व्यक्ति नहीं थे. उनका जन्म 1882 में एक धनी उच्च वर्गीय परिवार में हुआ था. राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट उनके पांचवें चचेरे भाई थे. 1921 में, वो पोलियो से बीमार हो गए, और उनके पैरों को लकवा मार गया. उसके बाद वो फिर कभी भी कुछ कदमों से अधिक नहीं चल पाए और वो भी भारी धातु के ब्रेसिज़ के साथ. जितना संभव हुआ उन्होंने उस बात को छुपा कर रखा. वो बारह साल से अधिक समय तक राष्ट्रपति रहे, फिर भी वे सार्वजनिक रूप से वो कभी भी व्हीलचेयर पर नहीं दिखाई दिए.

अध्याय 7

बड़ा परिवर्तन

जब रूजवेल्ट ने 4 मार्च, 1933 को पदभार ग्रहण किया तब उन्होंने राष्ट्र को बताया कि कुछ बड़े बदलाव होंगे. सरकार, राष्ट्र को ठीक करने के लिए जो कुछ भी आवश्यक होगा वो करेगी. राष्ट्रपति नए प्रयोग करने को तैयार थे. उन्होंने सलाह देने के लिए "ब्रेन ट्रस्ट" नामक सलाहकारों का एक समूह गठित किया.

समूह हर तरह के नए विचार लेकर आया. इस समूह में उनकी श्रम सचिव - मिसेज़ फ्रांसिस पर्किन्स भी शामिल थीं. वो अमेरिकी कैबिनेट पद पर नियुक्त होने वाली पहली महिला थीं.

रूजवेल्ट के पहले कार्यों में से अभियान के दौरान किए एक वादे को पूरा करना था. उन्होंने शराबबंदी रद्द कर दी. उससे महामंदी खत्म नहीं हुई, लेकिन उसने लोगों को खुश करने में मदद की. उससे यह भी साबित हुआ कि एफडीआर अपने वादों को निभाने के लिए कटिबद्ध थे.

विल रोजर्स

रूजवेल्ट की अध्यक्षता के पहले सौ दिनों में ही राष्ट्र का मिजाज बदलने लगा. चार महीने से भी कम समय में कांग्रेस ने पंद्रह बड़े विधेयक पारित किए. यह गति बेहद तेज़ और अनसुनी थी. आमतौर पर किसी विधेयक पर मतदान होने से पहले हफ्तों तक बहस होती थी. एक लोकप्रिय कॉमेडियन विल रोजर्स ने टिप्पणी की, "कांग्रेस अब कानून पारित नहीं करती है - वे बिलों को देखते ही उसे लहराती है."

FERA का प्रशिक्षण शिविर

रूजवेल्ट ने तीन चीज़ों पर अपना ध्यान केंद्रित किया - उन्होंने रुपये, राहत, वसूली और रिफॉर्म पर अपना ध्यान केंद्रित किया. राहत का मतलब मदद था. वो सबसे पहले आया. जो लोग भूख से मर रहे थे या अपने घरों को खोने वाले थे, उनके पास दीर्घकालिक परिवर्तनों के प्रभावी होने की प्रतीक्षा करने का समय नहीं था. उनके लिए तुरंत कुछ करना था. ब्रेन-ट्रस्ट के एक सदस्य ने बताया, "लोग लंबे समय के लिए नहीं खाते हैं. वे हर रोज़ खाते हैं."

रूजवेल्ट की कई परियोजनाओं को उनके पहले अक्षरों से जाना जाता था कि उन्हें "वर्णमाला-एजेंसियां" कहा जाता था. पहली राहत योजनाओं में से तीन FERA (संघीय आपातकालीन राहत एजेंसी), CWA (सिविल वर्क्स एडमिनिस्ट्रेशन), और CCC (नागरिक संरक्षण कोर) थीं. FERA ने उन लोगों को पैसा दिया जिन्हें उसकी सख्त आवश्यकता थी. उसने नौकरियों के प्रशिक्षण में भी मदद की और नए रोजगार पैदा करने की कोशिश की. 1935 तक, FERA ने दो करोड़ से अधिक श्रमिकों की मदद की थी.

FERA ने खेतों में सड़ रही फसलों का उपयोग करने की भी कोशिश की. उससे भूखे लोगों को भोजन खिलाने में मदद मिली. और उसने स्कूल लंच की पहली राष्ट्रीय प्रणाली स्थापित की.

रूजवेल्ट के पहले कृत्यों में से एक था सभी बैंकों को बंद करना. फिर बाद में उन्होंने केवल स्थिर बैंकों को ही खोला. इससे लोगों में बैंकों के प्रति विश्वास बढ़ा. और वे बैंकों का फिर से इस्तेमाल करने लगे.

राष्ट्रपति के रूप में अपने पहले भाषण में, रूजवेल्ट ने अमेरिकी लोगों से कहा, "केवल एक चीज जिससे हमें डरना चाहिए, और वो है खुद के डर से." अपने कार्यक्रमों से अब राष्ट्रपति लोगों को इस बात का यकीन दिला रहे थे.

CWA ने चालीस लाख से अधिक श्रमिकों के लिए अल्पकालिक रोजगार पैदा किए. इन श्रमिकों ने सड़कों, स्कूलों, पार्कों, पुलों और आउट-हाउस जैसी सार्वजनिक संरचनाओं का निर्माण किया और उनकी मरम्मत की.

CCC का उद्देश्य "होबो" जैसे युवा बेरोजगार लोगों के लिए था. वे लोग राष्ट्रीय वनों और उद्यानों के शिविरों में रहने गए. वहां उन्होंने पेड़ लगाए, जंगल की आग बुझाई, और शिविरों का निर्माण किया. शाम को, कई लोगों ने पढ़ाई करके हाई-स्कूल का डिप्लोमा भी अर्जित किया.

एलेनोर रूजवेल्ट

एलेनोर रूजवेल्ट एक बहुत ही असामान्य प्रथम महिला थीं. उन्होंने देश चलाने के काम में अपने पति की काफी मदद की. अतीत में, राष्ट्रपतियों की पत्नियां आमतौर पर पृष्ठभूमि में ही रहती थीं. लेकिन एलेनोर ने अपने पति के विचारों को आगे बढ़ाते हुए भाषण दिए. उन्होंने महिलाओं के अधिकारों और नस्लीय समानता के लिए भी काम किया. उनका "माई डे" नाम से अखबार में एक लोकप्रिय कॉलम भी था.

उन्हें अमेरिकियों से एक वर्ष में तीन लाख पत्र मिलते थे. अमरीकी, उन्हें एक दोस्त के रूप में देखते थे. उनमें कई बच्चों के पत्र भी होते थे. बच्चे अक्सर एक साइकिल, टाइपराइटर, या डॉक्टर के लिए पैसे या अच्छे कपड़े मांगते थे ताकि वे स्कूल जा सकें. एलेनोर इन सभी पत्रों का व्यक्तिगत रूप से उत्तर नहीं दे पाती थीं लेकिन उन्होंने ऐसे कार्यक्रम स्थापित करने की कोशिश की जिन्होंने बच्चों की मदद की और उन्हें स्कूल में रहने में मदद की.

दूसरा R रिकवरी के लिए खड़ा था. यह उन कानूनों को संदर्भित करता है जिनका अर्थ अर्थव्यवस्था को उछाल देना था. इनमें से सबसे महत्वपूर्ण NRA (नेशनल रिकवरी एडमिनिस्ट्रेशन) बनाया गया. इसने व्यवसायों को न्यूनतम मजदूरी, काम के घंटों की सीमा और बाल श्रम की समाप्ति पर सहमत होने के लिए प्रोत्साहित किया. केवल NRA में शामिल होने वाले व्यवसाय ही NRA ईगल प्रदर्शित कर सकते हैं. अधिकांश व्यवसाय दिखाना चाहते थे कि वे सहयोग कर रहे हैं. यह पहली बार था जब अमेरिकी सरकार ने श्रमिकों और उनके मालिकों के बीच संबंधों को नियंत्रित करने की कोशिश की थी.

AAA अग्रिकल्चरल एडजस्टमेंट एक्ट (कृषि समायोजन अधिनियम) ने किसानों को इसके लिए भुगतान किया कि वे कितना खाना पैदा कर सकते थे, जिससे उनकी पैदावार बर्बाद न हो. HOLC (होम ओनर्स लोन कॉर्पोरेशन) ने लोगों को अपना घर खोने से बचाने में मदद की.

TVA (टेनेसी वैली अथॉरिटी) ने टेनेसी नदी पर बांधों का निर्माण किया, जिससे उस क्षेत्र में बिजली और सिंचाई आई, जहाँ पर उसकी कमी थी. यह आज भी मौजूद है.
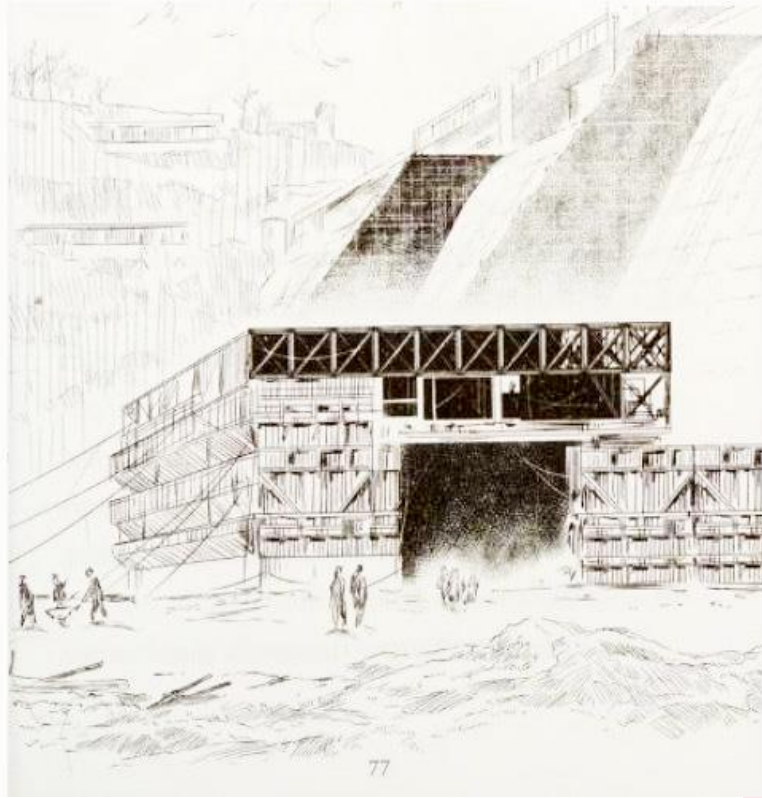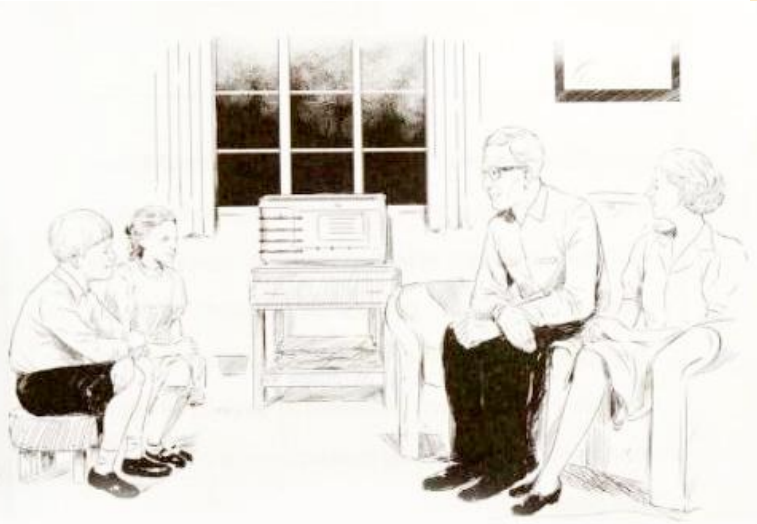
रूजवेल्ट का अंतिम R रिफार्म यानि सुधार के लिए खड़ा था. ये ऐसे कार्य थे जो यह सुनिश्चित करने के लिए थे कि वैसी महान महामंदी दुबारा फिर कभी न आए. उन्होंने यह नियंत्रित करने की कोशिश की कि बैंकों को किस तरह के जोखिम उठाने की अनुमति हो. और उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि शेयर बाजार, निवेशकों को पूरी जानकारी दें. रूजवेल्ट द्वारा लगाए गए नियंत्रण 1999 तक चले. फिर कांग्रेस ने उनमें से कई को समाप्त कर दिया. कुछ अर्थशास्त्रियों का मानना था कि इससे 2008 में अमेरिका को हिला देने वाले वित्तीय संकट का कारण बनने में मदद मिली होगी.

रूजवेल्ट ने अपने पहले सौ दिनों में जो व्यापक बदलाव किए, उन्हें "न्यू-डील" कहा गया. लगभग तुरंत ही, उन्होंने उससे आशा की एक लहर पैदा कर दी. रूजवेल्ट ने रेडियो पर अनौपचारिक "फायरसाइड चैट्स" शुरू किए. कई अमेरिकी उन्हें एक दोस्त के रूप में देखते थे जो वास्तव में उनकी परवाह करते थे.

चूंकि इतने सारे लोगों ने रूजवेल्ट पर भरोसा किया, इसलिए लोगों का फिर से अर्थव्यवस्था में विश्वास होने लगा. वे अब श्रमिकों को काम पर रखने या पैसा खर्च करने से नहीं डरते थे. बेरोजगारी कम होने लगी थी.

लेकिन पहले सौ दिनों के उत्साह के बाद चीजें हमेशा सुचारू रूप से नहीं चलीं.

श्रम आंदोलन का विकास

महामंदी के दौरान अमेरिकी श्रमिक आंदोलन भी परिपक्व हुआ. आलोचकों के अनुसार वो आंदोलन कम्युनिस्टों द्वारा चलाया जा रहा था. कुछ लोगों ने तो राष्ट्रपति रूजवेल्ट पर एक कम्युनिस्ट होने का आरोप भी लगाया. 1917 में, एक कम्युनिस्ट क्रांति ने रूस की सरकार को उखाड़ फेंका था. रूसियों ने दावा किया कि वे सरकार की सारी शक्ति श्रमिकों के हाथों में दे रहे थे. अमेरिकी श्रमिक आंदोलन में कुछ लोग कम्युनिस्टों के विचारों से प्रेरित थे. लेकिन कई लोग केवल उन श्रमिकों की मदद करने में रुचि रखते थे जिन्हें ज़िंदा रहने के लिए बहुत कम मजदूरी मिलती थी.

मंदी के दौरान, श्रमिक अपने मालिकों के साथ अधिक सौदेबाजी करने के लिए श्रमिक संघों में गठित होते थे. कई हड़तालें हुईं. इसका मतलब था कि श्रमिक अपना काम करने से इनकार करते थे और अन्य किसी को वो काम करने नहीं देते थे. यदि सभी मजदूर हड़ताल करने के लिए सहमत हो जाते, तो वे अपनी मांगें पूरी होने तक किसी फैक्ट्री को बंद रख सकते थे.

रूजवेल्ट ने यूनियनों का समर्थन करके अमीर व्यापारियों को नाराज किया. "अगर मैं किसी कारखाने में काम करने गया तो सबसे पहले, मैं एक मज़दूर संघ में शामिल होऊंगा," उन्होंने कहा.
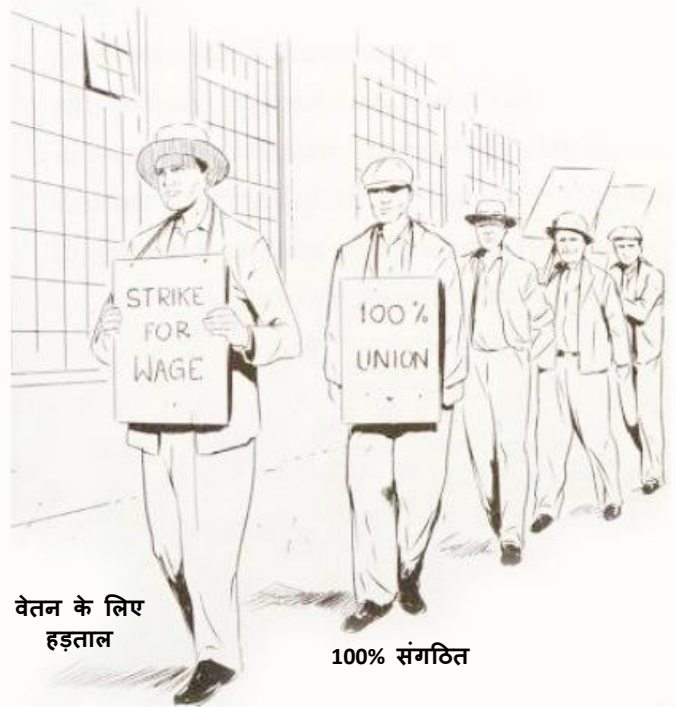
वेतन के लिए हड़ताल

100% संगठित

अध्याय 8

धूल का कटोरा

जैसे-जैसे उम्मीद बढ़ने लगी, एक नया संकट शुरू हुआ. उसके लिए उससे बदतर समय नहीं हो सकता था. 1930 के बाद से देश के मध्य भाग में बारिश नहीं हुई. वहां के खेत संकट में पड़ गए. खेतों में फसल सूख गई. खेत के जानवरों को खाने के लिए पर्याप्त घास नहीं मिली. फिर कुछ और भी बुरा हुआ.

बीसवें दशक के उफान के दौरान, बड़े मैदानों में किसानों ने फसल बोने के लिए घास की जुताई कर दी थी. इससे नंगी मिट्टी बाहर निकल आई थी. अब खेत खाली पड़े थे. सूखी मिट्टी को नीचे पकड़े रखने के लिए अब पौधों की जड़ें नहीं होने के कारण, मिट्टी, धूल भरी आंधी के रूप में उड़ने लगी. उससे दिन, रात में बदल गया. घर के अंदर भी लोग मुश्किल से सांस ले पाए. रेत के विशाल बहाव के नीचे कारें, घर और पूरे खेत दब गए. धूल भरी आंधी के बाद खेत चांद की तरह सूखे और बंजर नजर आने लगे.

1935 में, कृषक समुदाय का अपना "काला" दिन हुआ, जैसा कि छह साल पहले शेयर बाजार में "काला दिन" था. रविवार, 14 अप्रैल को इतनी भयानक धूल भरी आंधी आई कि उसे "ब्लैक संडे" कहा गया. तूफानों से नष्ट हुए क्षेत्र को "डस्ट-बाउल" का उपनाम दिया गया. जब लोगों के फेफड़े धूल से भर गए तब उन्हें "धूल निमोनिया" हुआ. बच्चे घाटियों में खो गए या फिर धूल में जिंदा दफन हो गए. "हम धूल के साथ रहते हैं, उसे खाते हैं, और उसके साथ ही सोते हैं," एक आदमी ने लिखा. न्यूयॉर्क शहर में धूल की परत इतनी मोटी थी कि कभी-कभी दोपहर में भी लाइट्स चालू रखनी पड़ती थीं.

रूजवेल्ट की सरकार ने जमीन को ठीक करने में मदद करने की कोशिश की. उन्होंने किसानों को इतने अधिक घास का मैदान जोतने से रोका. लाखों नंगे एकड़ खेतों में घास लगाई गई. सीसीसी ने हवा के झोंकों को रोकने के लिए बीस करोड़ से अधिक पेड़ लगाए. और सरकार ने किसानों को फसल उगाने के तरीकों के बारे में सिखाने के लिए विशेषज्ञों को नियुक्त किया जिससे उनकी मिट्टी को नुकसान नहीं पहुंचे. कुछ किसान बाहरी लोगों की सलाह सुनने को तैयार नहीं थे. इसलिए, सरकार ने उन्हें नए तरीकों को आजमाने के लिए पैसे और मुआवज़ा दिया.

इस तरह के प्रयासों से मदद मिली. लेकिन कई किसानों के लिए तब तक बहुत देर हो चुकी थी. "डस्ट बाउल" में लगभग एक-चौथाई किसान परिवारों ने अपना सब कुछ खो दिया था. उनमें से कई लोग अपनी कारों में बैठे और पश्चिम की ओर कैलिफोर्निया चले गए, जहां सूखा नहीं था. वहां उन्हें खेतों में काम मिलने की उम्मीद थी. क्योंकि उनमें से बहुत से ओक्लाहोमा से आए थे, उन्हें तिरस्कारपूर्वक "ओकेज़" के रूप में जाना जाता था - भले ही वे टेक्सास या अर्कांसस से आए हों.

उन्होंने पाया कि कैलिफ़ोर्निया में भी बहुत कम नौकरियां थीं. और वहां उनका स्वागत नहीं हुआ. प्रवासियों ने हमेशा कड़ी मेहनत की थी. लेकिन बहुत से लोगों ने माना कि वे बेवकूफ थे और वे उनका तिरस्कार करने लगे. उपलब्ध कुछ नौकरियों की प्रतिस्पर्धा में, प्रवासियों ने कुछ अन्य लोगों को भी नाराज किया. लॉस एंजिल्स के पुलिस प्रमुख ने 125 पुलिसकर्मियों को राज्य सीमा पर तैनात किया जिससे प्रवासी मज़दूर कैलिफ़ोर्निया में न घुस सकें.

डोरोथिया लेंज

1935 में फोटोग्राफर डोरोथिया लेंज को रूजवेल्ट की फार्म सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेशन (FSA) द्वारा काम पर रखा. उनका काम प्रवासी श्रमिकों की तस्वीरें खींचना था. उनकी तस्वीरें देश भर के अखबारों को मुफ्त में दी जाती थीं. लेंज को उम्मीद थी कि लोग जिस दुख में जी रहे हैं, उसे देखकर देश के लोगों को उनसे सहानुभूति होगी. उनकी सबसे प्रसिद्ध तस्वीर "प्रवासी माँ" के रूप में जानी जाती है. इसमें कैलिफोर्निया के एक शिविर में एक बत्तीस वर्षीय महिला को दो बच्चों के साथ दिखाया गया था. महिला ने लेंज को बताया कि उसने खाना खरीदने लेने के लिए अपनी कार के टायर बेचने पड़े थे.

कैलिफोर्निया भी अन्य राज्यों की तरह महामंदी से जूझ रहा था. वो हर दिन इतनी संख्या में आने वाले सभी बेघर परिवारों से निपट नहीं सकता था. खेती के हर काम के लिए सैकड़ों उत्सुक श्रमिक प्रतिस्पर्धा कर रहे थे. इसने मजदूरी को इतना कम कर दिया कि कोई भी जीने के लिए पर्याप्त नहीं कमा पाता था. भीड़-भाड़ वाले, रोगग्रस्त शिविरों में रहकर मजदूर जगह-जगह फसलों का पीछा करते थे.

सरकार ने मदद करने की कोशिश की. सरकार ने तेरह मॉडल शिविरों का निर्माण किया. इन शिविरों में पानी की सुविधा थी और वे स्वच्छ थे. वे शिविर वहां रहने वाले लोगों द्वारा ही संचालित किए जाते थे. लेकिन उनमें केवल कुछ ही लोगों को आश्रय मिल सकता था, और वे नौकरी नहीं दे सकते थे. यहां तक कि जब देश के बाकी हिस्सों में धीरे-धीरे स्थिति ठीक हुई उसके बावजूद प्रवासी मज़दूर महामंदी के अंत तक हताश बने रहे.
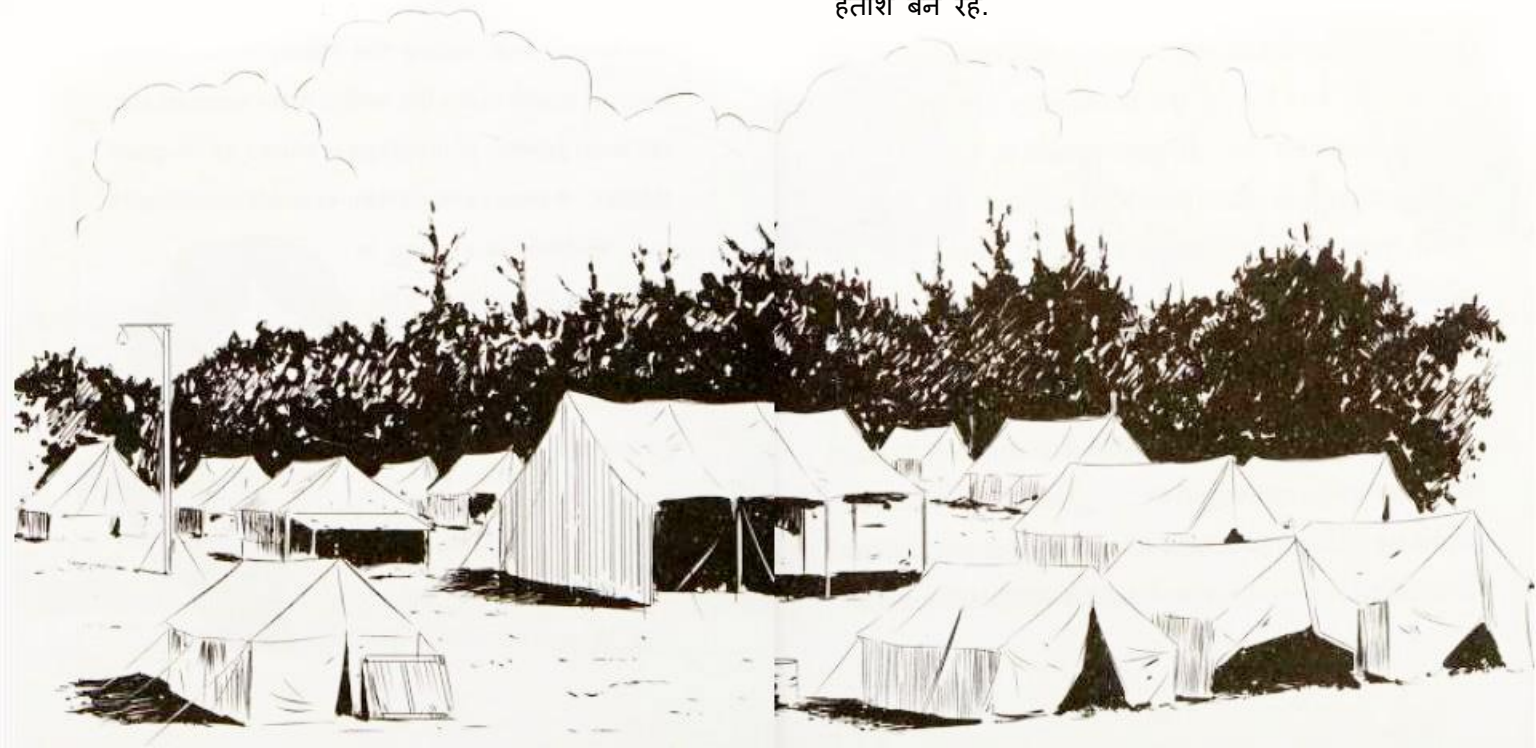
अध्याय 9

और भी बड़े बदलाव

1935 में, रूजवेल्ट ने सुधारों की दूसरी लहर शुरू की. उनका उद्देश्य अमीर और गरीब के बीच की विशाल खाई को कम करना था. नए कानूनों ने उन अमेरिकियों की रक्षा करने की कोशिश की जो बूढ़े, कमजोर, बीमार या बेरोज़गार थे. इनमें सबसे महत्वपूर्ण एक सामाजिक सुरक्षा अधिनियम था. इसने श्रमिकों को उनके सेवानिवृत्त होने के बाद पैसा दिया. उसने उन लोगों के लिए भी धन उपलब्ध कराया जो बेरोजगार थे या काम नहीं कर सकते थे, और विधवाओं और अनाथों को भी. रूजवेल्ट ने अपने कार्यक्रमों का समर्थन करने के लिए सबसे अमीर नागरिकों पर आयकर में वृद्धि की.

NLRA (राष्ट्रीय श्रम संबंध अधिनियम) ने श्रमिकों को अधिक शक्ति देने की कोशिश की. इसने उन्हें यूनियनों में शामिल होने और यदि आवश्यक हो तो हड़ताल करने के अधिकार की गारंटी भी दी गई, और इसके लिए मालिकों को यूनियनों के साथ बातचीत और समझौता करने की ज़रुरत पड़ती.

1935 के एक अधिनियम ने बहुत ही सफल WPA (वर्क्स प्रोग्रेस एडमिनिस्ट्रेशन) बनाया. वो वहीं से शुरू हुआ जहां CWA ने छोड़ा था. पुस्तकालयों, राजमार्गों, डाकघरों, संग्रहालयों और खेल के मैदानों को बनाने या पुनर्स्थापित करने के लिए श्रमिकों को काम पर रखा गया. कई WPA की परियोजनाएं आज भी पूरे देश के कस्बों में उपयोग में लाई जाती हैं.

WPA ने कलाकारों, लेखकों और संगीतकारों को नियुक्त करने के लिए एक विशेष प्रयास किया. WPA के भित्ति चित्र - दीवारों पर पेंटिंग - अभी भी कई सार्वजनिक भवनों में देखी जा सकती हैं. जैक्सन पोलक, मार्क रोथको और जैकब लॉरेंस जैसे प्रसिद्ध कलाकारों ने WPA परियोजनाओं पर काम किया. WPA ने अमेरिकी राज्यों में से प्रत्येक के लिए गाइड-बुक की एक प्रसिद्ध श्रृंखला भी तैयार की.

कुछ लोगों ने सोचा कि रूजवेल्ट अमेरिकी सरकार में साम्यवादी विचारों की घुसपैठ कर रहे थे. लेकिन देश का अधिकांश लोगों ने उनका समर्थन किया.

उन्होंने 1936 में दो राज्यों को छोड़कर बाकी सभी राज्यों में आसानी से फिर से चुनाव जीता. हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने सोचा कि एफडीआर जो कुछ कर रहे थे वो संविधान के खिलाफ था.

1935 में, अदालत ने रूजवेल्ट के कुछ प्रमुख पुनर्प्राप्ति विचारों के खिलाफ फैसला सुनाया. यह उनके लिए बहुत बड़ा झटका था. सर्वोच्च न्यायालय के नौ न्यायाधीशों की आजीवन सेवा थी, इसलिए रूजवेल्ट उन लोगों से छुटकारा नहीं पा सकते थे जो उनसे असहमत थे. इसके बजाय, 1937 में, उन्होंने और अधिक न्यायाधीशों को जोड़ने का प्रयास किया. वो अदालत को अपने समर्थकों से भरना चाहते थे जो उनके खिलाफ न्यायाधीशों को पछाड़ दें.
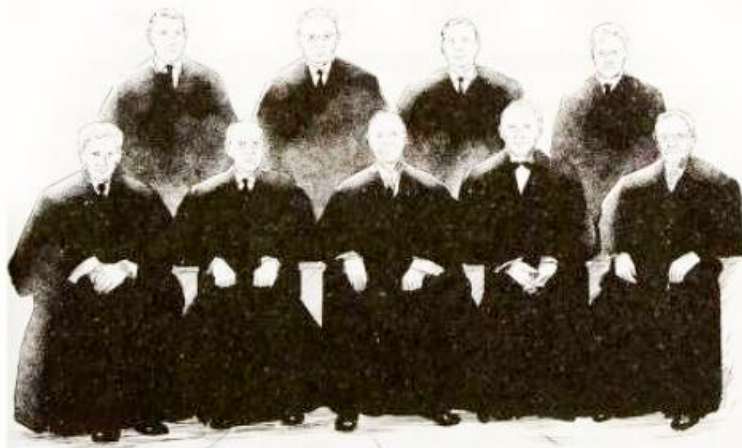
इस बार रूजवेल्ट बहुत आगे निकल गए थे. कांग्रेस ने उन्हें कोर्ट में न्यायाधीशों को जोड़ने नहीं दिया. हालाँकि, कुछ वर्षों के भीतर, कई न्यायाधीश सेवानिवृत्त हो गए या उनकी मृत्यु हो गई, इसलिए रूजवेल्ट वैसे भी अदालत को अपने सहयोगियों से भरने में सक्षम रहे.

1940 में, रूजवेल्ट तीसरे कार्यकाल के लिए चुनाव लड़े. ऐसा कोई कानून नहीं था जो कहे कि वो ऐसा नहीं कर सकते थे, लेकिन किसी राष्ट्रपति ने ऐसा पहले कभी नहीं किया था. डेमोक्रेटिक नेशनल कन्वेंशन शिकागो में आयोजित किया गया. रूजवेल्ट ने एक पत्र लिखा था जिसमें प्रतिनिधियों को बताया गया - कि वो जिसे चाहें उसे अपना उम्मीदवार को चुन सकते थे. प्रतिनिधि तय करेंगे कि रूजवेल्ट चुनाव लड़ें या नहीं. अचानक एक आवाज चिल्लाई, "हमें रूजवेल्ट चाहिए. दुनिया रूजवेल्ट को चाहती है!" उन्हें तुरंत भारी बहुमत से नामांकित किया गया. (बाद में पता चला कि आवाज शिकागो के सीवर अधीक्षक की थी.)

अध्याय 10

युद्ध!

रूजवेल्ट अपने तीसरे कार्यकाल के लिए चुने गए. वो महामंदी को खत्म करने का वादा करके राष्ट्रपति बने थे. चीजें बेहतर हो रही थीं. लेकिन महामंदी अभी भी खत्म नहीं हुई थी. हालाँकि, विश्व की घटनाओं ने जल्द ही रूजवेल्ट को केवल अमेरिकी अर्थव्यवस्था पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बना दिया. 1939 में यूरोप में द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हो गया था.

जर्मनी में नाज़ी और इटली और जापान में उनके समर्थक दूसरे देशों पर आक्रमण कर रहे थे. ऐसा लग रहा था कि वे पूरी दुनिया को धमकी दे रहे हों. कई अमेरिकियों को युद्ध से बाहर रहने की उम्मीद थी.
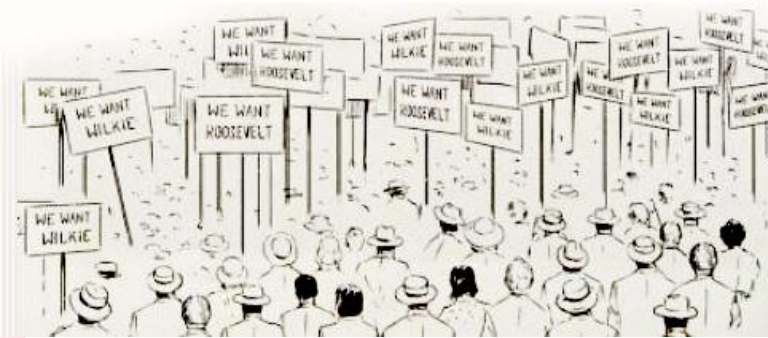
नाज़ी नेता
एडोल्फ हिटलर
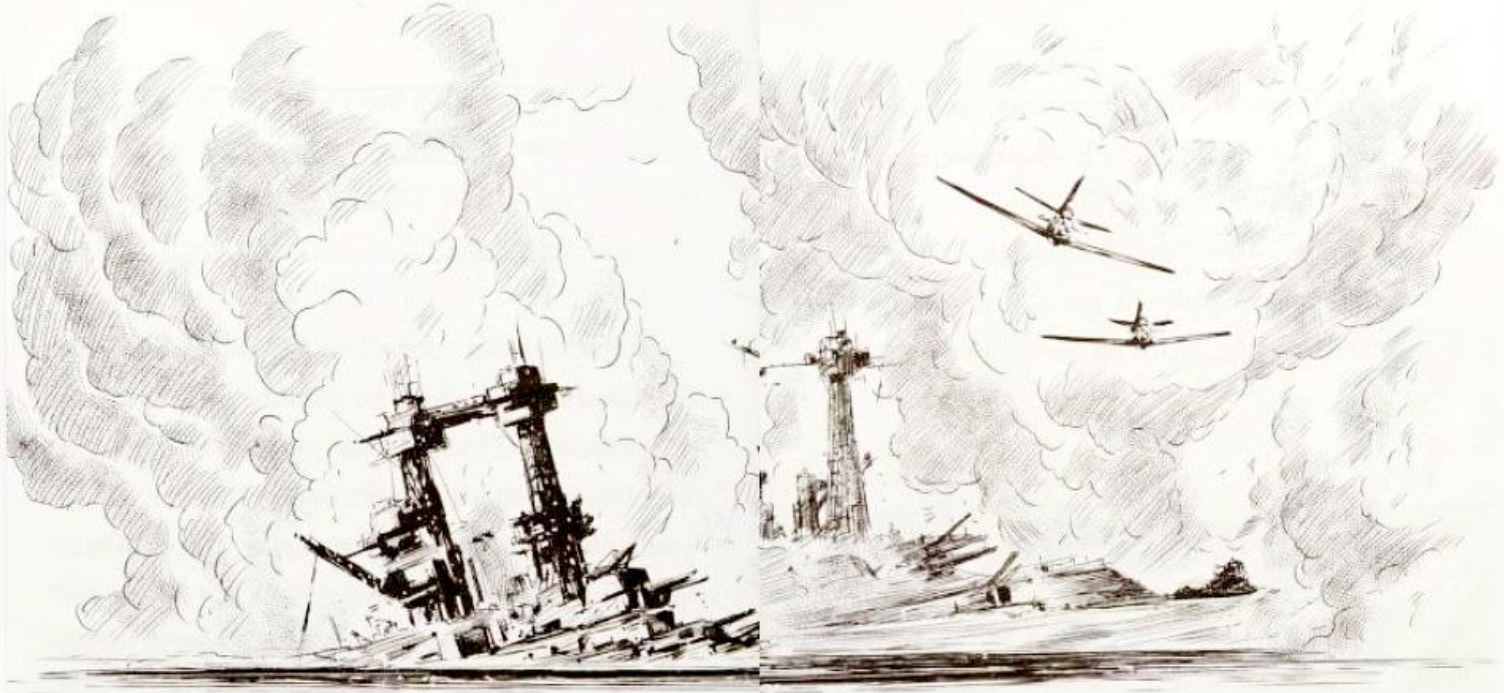
रूजवेल्ट ने उनसे वादा किया कि वो अमेरिकियों को लड़ने से रोकने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे. लेकिन उन्हें शायद इस बात का अहसास हो गया था कि अमेरिका अंततः युद्ध में शामिल हो जाएगा.

7 दिसंबर, 1941 को, जापानियों ने हवाई में पर्ल हार्बर पर बमबारी की, और फिर अमेरिका को युद्ध की घोषणा करने के लिए मजबूर होना पड़ा.

रूजवेल्ट की महामंदी को समाप्त करने की योजना हमेशा से अधिक से अधिक रोजगार पैदा करने की थी. लेकिन वो कभी भी सभी को नौकरियों देने में सक्षम नहीं थे. अब, युद्ध के आगमन के साथ, बेरोजगारी गायब हो गई. ज़्यादातर लोग सेना में शामिल हुए. अन्य लोगों को बाकी नौकरियां आसानी से मिल गईं.

और युद्ध लड़ने के लिए जहाजों, हवाई जहाजों और हथियारों के निर्माण के लिए बड़ी संख्या में श्रमिकों की आवश्यकता थी. अचानक काम करने वाले मज़दूरों की कमी हो गई.

ब्रुकलिन नेवी यार्ड ने युद्धपोतों का निर्माण और मरम्मत की. उसमें पचहत्तर हजार से अधिक लोगों को रोजगार मिला, जिन्होंने एक वर्ष में लगभग 1,500 जहाजों पर काम किया.
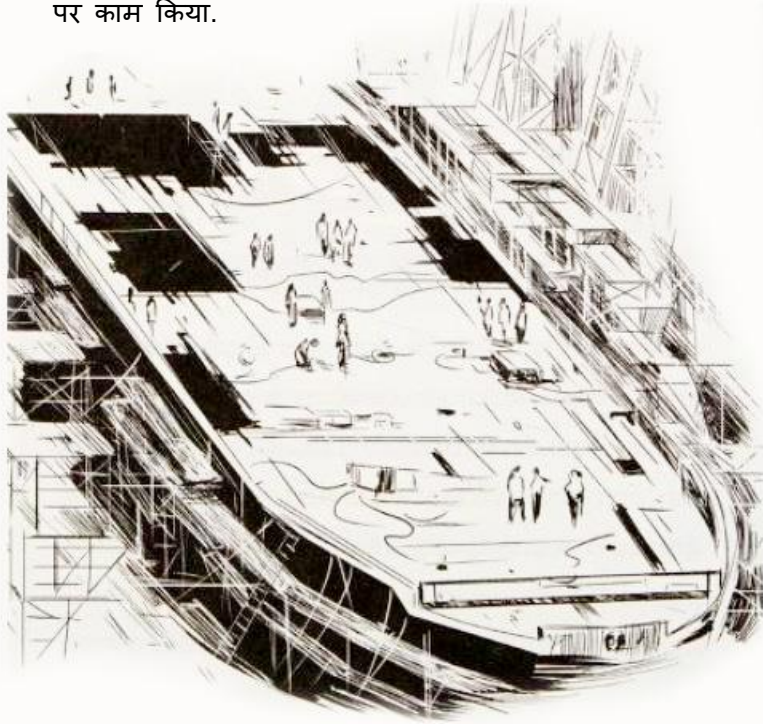
पूरे देश में, ब्रुकलिन में नेवी यार्ड जैसी ही अधिक-से-अधिक कामगारों की ज़रूरत थी. उन्होंने ट्रक के साथ लाउडस्पीकर भेजे, और लोगों को नौकरी पर आने और युद्ध के प्रयासों में मदद करने की अपील की. महिलाओं और अल्पसंख्यकों को अचानक नए अवसर मिले.

उन्हें कुछ ऐसे कामों के लिए नौकरियां मिलीं जो युद्ध से पहले उनके लिए खुले नहीं थे. लोकप्रिय पोस्टरों में "रोज़ी मज़दूर" को दिखाया गया था, जो एक गर्वित महिला निर्माण कार्यकर्ता थी.

हम सब कुछ कर सकते हैं!

द्वितीय विश्व युद्ध दुनिया के इतिहास में एक भयानक समय था, और वो तीस के दशक में अज्ञात नए प्रकार के कष्टों को लेकर आया. लेकिन आर्थिक रूप से, उसने महामंदी का अंत कर दिया. जब तक अमेरिका युद्ध से उभरा, तब तक वो पृथ्वी पर सबसे अमीर राष्ट्र बन गया था.

अध्याय 11

राष्ट्रपति की शक्ति

युद्ध से पहले के वर्षों में, रूजवेल्ट ने किसी भी अन्य अमेरिकी राष्ट्रपति की तुलना में अधिक शक्ति का इस्तेमाल किया. युद्ध के समय में, कांग्रेस राष्ट्रपति को अतिरिक्त शक्तियां देने के लिए मतदान कर सकती थी ताकि वो संकट से निपट सकें. जब वो चुने गए, तो एफडीआर ने कांग्रेस से महामंदी के खिलाफ लड़ाई को, एक युद्ध के रूप में सोचने को कहा. उन्हें उस तरह की सत्ता की आवश्यकता थी जो अन्य राष्ट्रपतियों को केवल युद्धकाल के दौरान ही मिलती थी. वो चाहते थे कि "आपातकाल के खिलाफ युद्ध छेड़ने के लिए उन्हें व्यापक कार्यकारी शक्ति चाहिए, मुझे उतनी शक्ति मिले जो किसी राष्ट्रपति को एक विदेशी दुश्मन द्वारा आक्रमण के समय मिलती है."

कुछ इतिहासकार सोचते हैं कि एफडीआर संविधान की अनुमति से आगे निकल गए थे. यहां तक कि उनके कुछ समर्थकों ने उन्हें "मददगार तानाशाह" भी बुलाया था.

(तानाशाह देश का वो नेता होता है जो बिना किसी की स्वीकृति के वही करता है जो वो चाहता है.)

अमरीका के लोग अपनी सरकार से क्या उम्मीद करते थे उसे रूजवेल्ट ने पूरी तरह से बदल दिया. उससे पहले अधिकांश अमेरिकियों का मानना था कि सरकार को लोगों के जीवन में दखल नहीं देनी चाहिए थी. रूजवेल्ट ने उन्हें यह सोचने के लिए मजबूर किया कि सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार होती है कि सभी नागरिकों के पास जीवित रहने के लिए आवश्यक बुनियादी साधन हों - जैसे भोजन, शिक्षा और हरेक के सिर पर छत. जैसा कि अर्थशास्त्री आर्थर स्लेसिंगर ने बताया, अब ऐसे अमेरिका की कल्पना करना असंभव है जो उन अमेरिकियों को कोई मदद नहीं करे जो खुद को "अपनी गलती के बिना, आर्थिक या सामाजिक संकट में" पाते हों.

महामंदी देश के इतिहास में सबसे बुरे संकटों में से एक थी.

लोगों को डर था कि कहीं देश टूट न जाए. एक पत्रकार ने सोचा, "क्या जल्द ही हमारे परिवारों को दुनिया के खिलाफ शारीरिक रूप से, भोजन, आश्रय, संपत्ति के लिए संगठित होना आवश्यक होगा?"

रूजवेल्ट ने देश के सामने आने वाले बड़े खतरे को महसूस किया. कार्यालय में अपने पहले सौ दिनों के दौरान, एक आगंतुक ने उनसे कहा, "मिस्टर प्रेजिडेंट, यदि आपका कार्यक्रम सफल होता है, तो आप अमेरिकी इतिहास के सबसे महान राष्ट्रपति होंगे. यदि वो विफल होता है, तो आप सबसे खराब व्यक्ति होंगे."

"अगर कार्यक्रम विफल होता है," रूजवेल्ट ने उत्तर दिया, "तो मैं आखिरी व्यक्ति बनूंगा."

सौभाग्य से, ऐसा नहीं हुआ.

एफडीआर के अंतिम दिन

The Sentinel
PRESIDENT DEAD
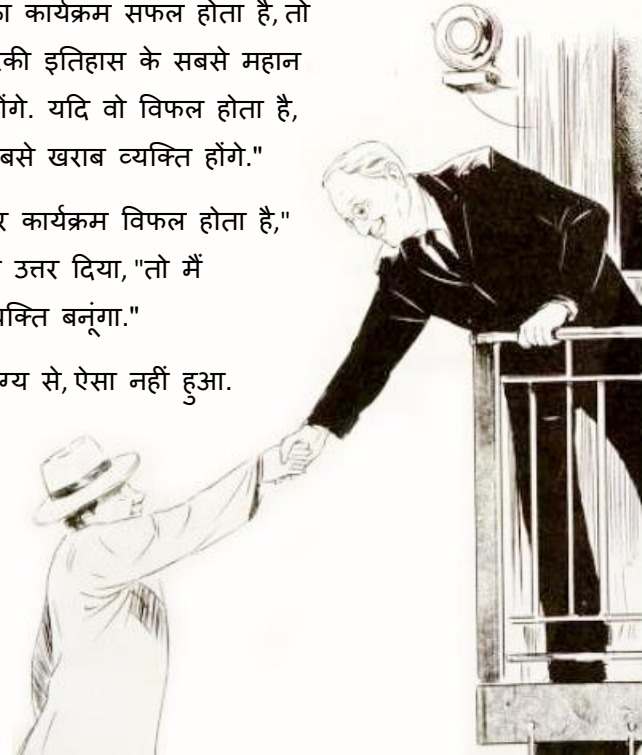
1944 में, रूजवेल्ट चौथे कार्यकाल के लिए राष्ट्रपति चुने गए. वो यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि जब द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हो जा, तो दुनिया एक सुरक्षित और अधिक शांतिपूर्ण जगह बने. उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ यानि यूनाइटेड नेशंस बनाने में मदद की. उसे दुनिया भर के देशों के लिए एक बैठक स्थल के रूप में डिजाइन किया गया था. वहां पर तमाम देश एक साथ मिल सकते थे और लड़ने के बजाय चर्चा करके अपनी समस्याओं का समाधान निकाल सकते थे. पर तब तक, रूजवेल्ट का स्वास्थ्य खराब हो रहा था.

रूजवेल्ट अपने चौथे कार्यकाल के केवल तीन महीने ही जीवित रहे. उनके उपाध्यक्ष, हैरी ट्रूमैन ने उनका कार्यकाल पूरा किया. जब एफडीआर की मृत्यु हुई, तो अमेरिकियों ने उन्हें उस व्यक्ति के रूप में याद किया जिसने उनके राष्ट्र को बचाया था. न्यूयॉर्क टाइम्स ने लिखा. "अब से सौ साल बाद लोग अपने घुटनों पर बैठकर भगवान का शुक्रिया अदा करेंगे कि फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट तब व्हाइट हाउस में थे."

हैरी ट्रूमैन ने अगला चुनाव जीता और 1953 तक राष्ट्रपति के रूप में कार्य किया.

हैरी एस. ट्रूमैन

महामंदी की समय-रेखा

1920 - वॉल स्ट्रीट पर अराजकतावादियों द्वारा बमबारी में अड़तीस लोग मारे गए

1929 - मार्च में हर्बर्ट हूवर राष्ट्रपति बने

1929 - अक्टूबर 29 को शेयर बाजार अब तक के सबसे निचले स्तर पर गिर गया

1930 - दस महीने की अवधि में 744 अमेरिकी बैंक फेल हुए

1931 - न्यूयॉर्क के गवर्नर फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट ने बेरोजगार श्रमिकों की मदद करने के लिए TERA स्थापित किया

1932 - मई में हजारों रिटायर्ड सैनिकों ने बोनस भुगतान की मांग को लेकर वाशिंगटन में मार्च किया

1932 - नवंबर में फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट राष्ट्रपति चुने गए

1933 - कांग्रेस ने रूजवेल्ट का "न्यू-डील" कानून पारित किया

1933 - दिसंबर में शराबबंदी क़ानून निरस्त हुआ

1935 - 14 अप्रैल को मिडवेस्ट अपने इतिहास में सबसे भयंकर धूल भरी आंधी की चपेट में आया

1936 - रूजवेल्ट दूसरे कार्यकाल के लिए फिर से चुने गए

1937 - नागरिक संरक्षण कोर (सीसीसी) बनाया गया

1938 - पहली बार अमेरिका में कानून द्वारा मज़दूरों के लिए न्यूनतम वेतन स्थापित हुआ

1940 - रूजवेल्ट तीसरे कार्यकाल के लिए अब तक चुने गए एकमात्र अमेरिकी राष्ट्रपति बने

1941 - जापानी ने पर्ल हार्बर पर बमबारी की. अगले दिन अमरीका ने द्वितीय विश्व युद्ध में प्रवेश किया

1944 - रूजवेल्ट चौथे कार्यकाल के लिए चुने गए

1945 - राष्ट्रपति रूजवेल्ट का कार्यालय में निधन

विश्व की समय-रेखा

1920 - शराब बंदी क़ानून शुरू हुआ

1929 - कॉमिक-स्ट्रिप चरित्र पोपेय की पहली बार सामने आया

1931 - एम्पायर स्टेट बिल्डिंग का निर्माण पूरा हुआ

1932 - अमेरिकी सीनेट के लिए चुनी गई पहली महिला

1933 - हिटलर जर्मनी का चांसलर बना

1935 - रात के समय प्रमुख लीग बेसबॉल खेल खेला गया

1937 - मई में न्यू जर्सी में हिंडनबर्ग, आग की लपटों में दुर्घटनाग्रस्त हो गया

1937 - जुलाई में दुनिया भर में उड़ान भरते समय अमेलिया इयरहार्ट गायब हो गईं

1937 - दिसंबर में एडवर्ड VIII ने अपने भाई जॉर्ज VI के पक्ष में इंग्लैंड के राजा के रूप में पद त्याग दिया

1938 - बॉलपॉइंट पेन का आविष्कार हुआ

1938 - नवंबर में, नाजियों ने हजारों यहूदी घरों को नष्ट किया

1939 - द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हुआ

1940 - विंस्टन चर्चिल, इंग्लैंड के प्रधानमंत्री बने

1941 - माउंट रशमोर पर नक्काशी का काम पूरा हुआ

'944 - इटली में पोम्पेई, के पास माउंट वेसुवियस ज्वालामुखी में विस्फोट हुआ.

1945 - नाजी जर्मनी ने वीई दिवस पर औपचारिक रूप से आत्मसमर्पण किया

एक फ्लैपर और उसका साथी नाच रहा है

दुर्घटना के बाद न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज के बाहर भीड़

न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज के अंदर

BROOKLYN DAILY EAGLE

And Complete Long Island News

LATE NEWS

WALL ST. IN PANIC AS STOCKS CRASH

Attempt Made to Kill Italy's Crown Prince

STOCKS CRASH IN RUSH TO SELL; BILLIONS LOST

ASSASSIN CAUGHT IN BRUSSELS MOB; PRINCE UNHURT

Hollywood Fire Destroys Films Worth Millions

FEAR 32 PERISHED IN LAKE MICHIGAN FERRY IS MISSING

PIECE OF PLANE LIKE DITEMAN'S IS FOUND AT SEA

High Duty Group Gave $700,000 to Coolidge Drive

CARNEGIE CHARGE OF PAID ATHLETES ROUSES COLLEGES

HOOVER'S TRAIN HALTED BY AUTO PLACED ON RAILS

WARDER SOUGHT TO KEEP SEA TRIP SECRET, AID SAYS

SOMERS NAMED AS HEAD OF NEW EXCHANGE BANK

दुर्घटना के एक दिन पहले एक अखबार की हेडलाइन

एक टिकर-टेप मशीन

राष्ट्रपति हर्बर्ट हूवर

हूवर-बांध और मीड झील

राष्ट्रपति और मिसेज़ फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट

न्यूयॉर्क शहर में एक डबलरोटी की लम्बी लाइन

बेरोज़गार लोग ब्रेड और सूप लेते हुए

लॉस एंजिल्स में एक डबलरोटी की लम्बी लाइन

बेघर लोग गरीब बस्तियों में कपड़े धोते हुए

कृषि सुरक्षा प्रशासन सहकारी समिति में
एक महिला और उसके बच्चे

"ओकेज़" पश्चिम की यात्रा पर
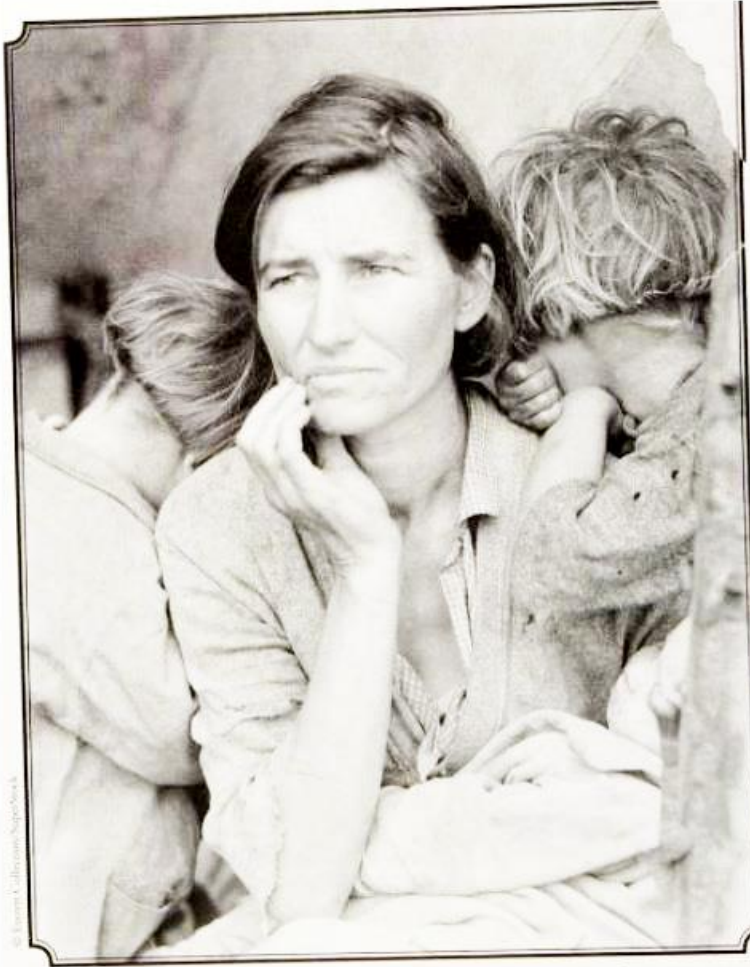
डोरोथिया लेंज द्वारा ली गई एक प्रवासी मां की प्रसिद्ध तस्वीर
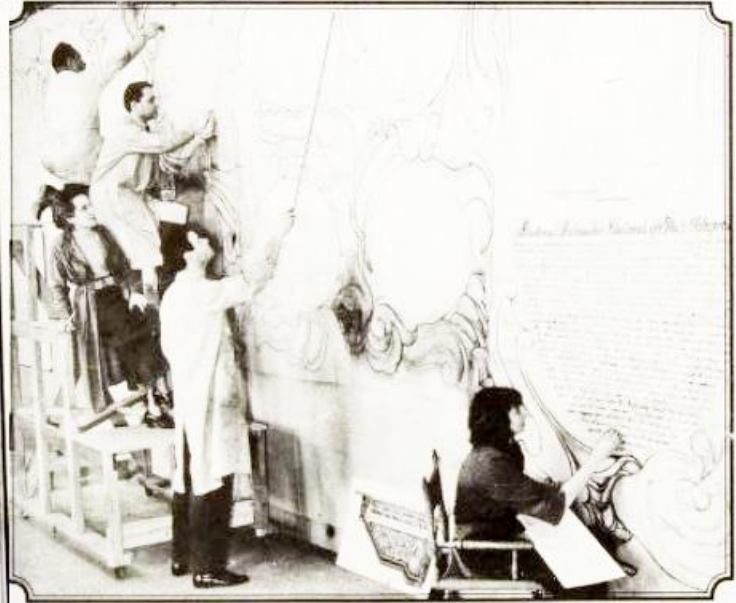
WPA कलाकार 1935 में न्यूयॉर्क शहर में एक भित्ति चित्र पर काम करते हुए
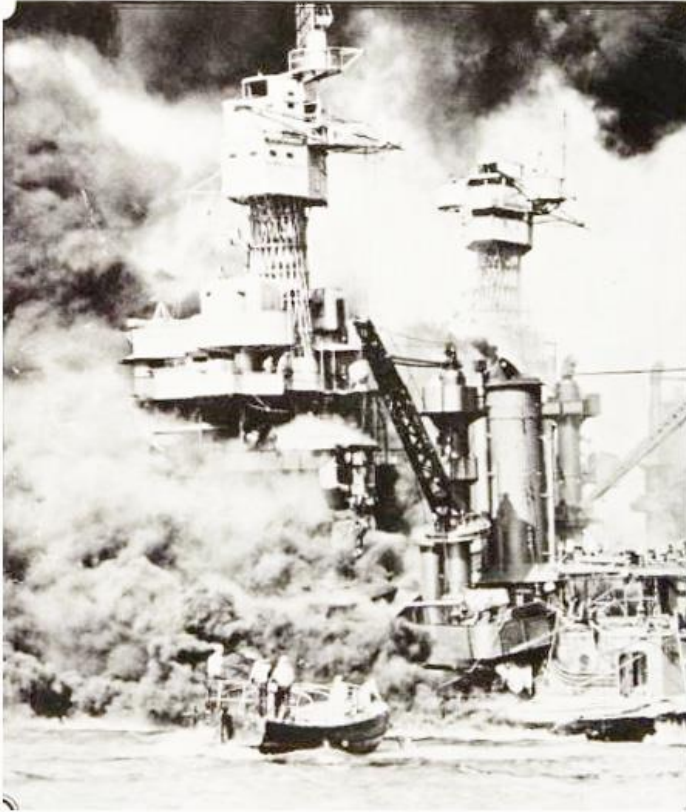
पर्ल हार्बर पर जापानी हमले के बाद जलते
अमेरिकी नौसेना के जहाज